!! ओ३म् !!
!! कृण्वन्तो विश्वमार्यम !!
वर्ष ३ अंक २८
विक्रम संवत् २०७६ माघ - फाल्गुन
फरवरी २०२१

आर्ष क्रान्ति

वैदिक समाज व्यवस्था के लिए समर्पित

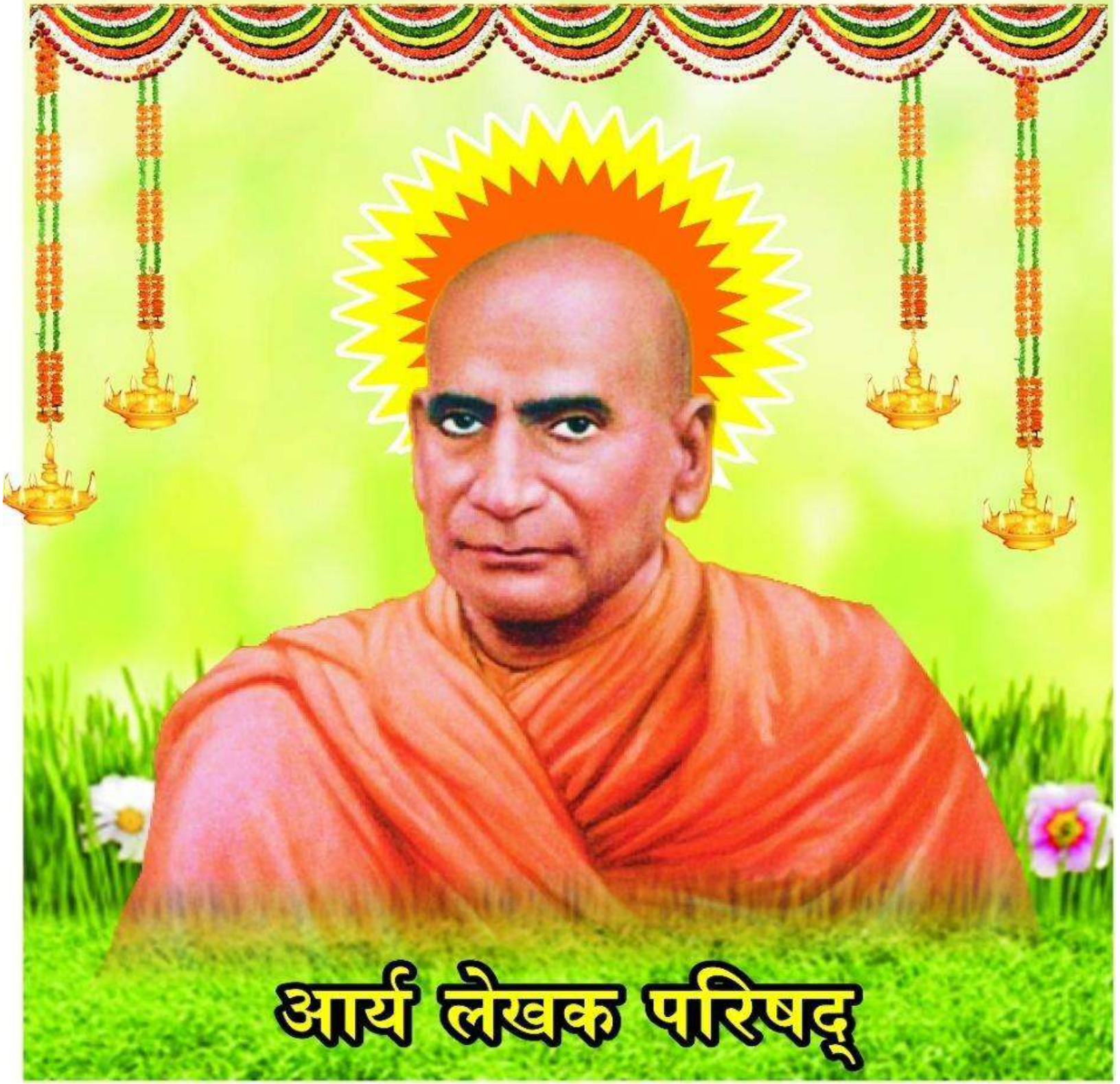

आर्य लेखक परिषद्

ओ३म्

आर्य लेखक परिषद् का मुख पत्र

आर्ष क्रान्ति

जनवरी २०२१

वर्ष–३ अंक–२८,
विक्रम संवत् २०७७
दयानान्दाब्द– १९७
कलि संवत् – ५१२२
सृष्टि संवत् –१,९६,०८,५३,१२२

प्रधान सम्पादक
वेदप्रिय शास्त्री
(७६६५७६५११३)

❖

सम्पादक
अखिलेश आर्येन्दु
(८१७८७१०३३४)

❖

सह सम्पादक
प्रांशु आर्य (कोटा)
(८७३९९७९६३०,
९९९३९७०९४०)

❖

आकल्पन
प्रवीण कुमार (महाराष्ट्र)

❖

सम्पादकीय कार्यालय
महर्षि दयानन्द आश्रम
ग्राम सिताबाडी, केलवाड़ा
जिला–बारां (राजस्थान)–३२५२१६

अनुक्रम

विषय

१. स्वस्थ लेखन (सम्पादकीय)
२. तुमको ही हे नाथ! पुकारें.....हो (कविता)
३. विकासवाद : लिपि और भाषा विकास का क्रम
४. Fifth Duty : Hospitality to the Helpless
५. ऋग्वेदरूप वाणी
६. वेदों में संनिहित है – भौतिक विज्ञान
७. ऋषि दयानन्द की वाणी ने आलोकित किया...
८. महर्षि दयानन्द : वेद, समाज और संस्कृति...
९. गजल
१०. स्वामी दयानन्द सरस्वती (कविता)
११. परवरिश (कहानी)
१२. वक्त का महत्व (कहानी)
१३. मात्र बजट बढाने से पर्यावरण प्रदूषण
१४. स्वराज (कविता)
१५. परिषद्–समाचार

ईमेल – aryalekhakparishad@gmail.com
वेबसाइट – https://aryalekhakparishad.com/
फेसबुक – आर्य लेखक परिषद्

Digital

सम्पादकीय

स्वस्थ लेखन

व्यक्ति और समाज के उत्थान और पतन में साहित्य का बहुत बड़ा योगदान रहता है। साहित्य लेखन पर निर्भर करता है। लेखन के माध्यम से मनुष्य अपने विचार और सामाजिक गतिविधियों का वर्णन अपने दृष्टिकोण से करता है। मानवीय मस्तिष्क बड़ा विचित्र होता है। वह यदि ईश्वर की सिद्धि में कुसुमांजलि लिख सकता है तो अनीश्वरवाद पर खंडनखण्डखाद्य भी लिख सकता है। कहावत है कि ***मुण्डे–मुण्डे मतिर्भिन्ना तुण्डे–तुण्डे सरस्वती***, अर्थात् हर मस्तिष्क में अलग–अलग बुद्धि और हरमुख में अलग–अलग शब्द होते हैं। प्रत्येक मनुष्य की प्रवृत्ति और रुचि भी भिन्न होती है। अतः लेखन भी अनेक प्रकार का होता है परन्तु प्रत्येक प्रकार के लेखन को साहित्य नहीं कहा जा सकता। साहित्य वही होता है जो व्यक्ति और समाज के हित में लिखा जाता है। उसके नैतिक चारित्रिक उत्थान और प्रगति के लिए लिखा जाता है। मानवता की रक्षा पारस्परिक प्रेम और अपनत्व बढ़ाने की नीयत से लिखा जाता है। जो साहित्य व्यक्ति और समाज को अस्वस्थ कर दे और उसे पतन के गर्त में धकेल दे उसे साहित्य कहना किसी प्रकार भी उचित नहीं है। व्यक्ति और समाज के जीवन में समय–समय पर अनेक प्रकार के सुख–दुख, हानि–लाभ और उत्थान पतन के अवसर आते रहते हैं। साहित्य निराश जीवन में आशा का संचार करने वाला जिजीविषा को बनाए रखने वाला, पतन से उत्थान की ओर ले जाने वाला सदैव उत्साह को बनाए रखने वाला होना चाहिए।

अभी कुछ समय पूर्व आर्य लेखक परिषद की ओर से एक वेबीनार संगोष्ठी का आयोजन इसी विषय को लेकर रखा गया था कि आर्य लेखक परिषद की लेखन और पत्रकारिता को लेकर वर्तमान में क्या भूमिका होनी चाहिए।

आर्य लेखक परिषद आर्य समाज की पूरक संस्था है और उसका उद्देश्य आर्य समाज के उद्देश्य को पूरा करना ही है। अतः उसे इस बात को ध्यान में रखकर ही अपनी कार्यप्रणाली निश्चित करनी चाहिए। आर्य समाज का उद्देश्य बहुत व्यापक है। *संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।* संसार जितना बड़ा है इतना बड़ा ही हमारा हृदय और हमारी सोच होनी चाहिए। तंग नजरी, ओछापन और संकीर्ण सोच वाला व्यक्ति इस कार्य के योग्य नहीं हो सकता। परन्तु दुर्भाग्य से आर्य समाज में योजनाबद्ध ढंग से इस दिशा में कभी कार्य ही नहीं किया गया। हमारे यहां एक अच्छे व्यक्तित्व को गढ़ने और संवारने की कोई योजना और व्यवस्था नहीं है। हमारे यहां अब तक जो भी अच्छे लेखक और सम्पादक हुए हैं वे अपनी स्वयं की श्रद्धा और स्वयं के श्रम से ही बने हैं। आर्य लेखक परिषद की इच्छा है कि वर्तमान में अच्छे लेखक, पत्रकार और सम्पादक प्रशिक्षण देकर तैयार किए जाएं और उनका एक उत्तम पाठ्यक्रम निर्मित किया जाए। सामान्य जन से लेकर उच्च कोटि के विद्वानों के स्तर का लेखन करने की व्यवस्था बनाई जाए। गूढ़ और जटिल विषयों पर सामूहिक लेखन की व्यवस्था हो। अपने से पूर्व हुए उत्तम सम्पादकों के अनुभवों से लाभ उठाया जाए।

दूसरी समस्या है भाषा की। भाषा की अशुद्धता और दुरूहता भी हमारी पत्र–पत्रिकाओं की एक बहुत बड़ी न्यूनता है। इस पर ध्यान नहीं दिया जा रहा। लगभग सभी पत्र पत्रिकाएं अशुद्ध छप रही हैं। संस्कृत के वाक्य और सूक्तियां, मंत्रांश प्रायः अशुद्ध छपते हैं जिन्हें अल्प पठित लोग ज्यों का त्यों याद कर लेते हैं और अन्यत्र उसी प्रकार अशुद्ध ही बोलते रहते हैं। हमारे लेखन में अशुद्धि निवारण और कठिन शब्दों के अर्थ देने पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

पत्र–पत्रिकाओं की प्रचार सामग्री और विषय वस्तु रोचक, ग्राह्य और शिष्ट हो, कलेवर आकर्षक हो। जिससे हर किसी का उसे उठाकर देखने और पढ़ने का मन करे। ईर्ष्या द्वेष और गाली गलौज को स्थान न दिया जाए।

विषय वस्तु को विभिन्न विधाओं में प्रस्तुत करने की आवश्यकता है। वैदिक सिद्धांतों और दर्शन को

कविता, कहानी, नाटक और उपन्यास आदि की विधा में लिखा जाना चाहिए। आर्य समाज में कविता का स्तर बहुत घटिया हो गया है। नाटक, कहानी और उपन्यास आदि के तो दर्शन ही दुर्लभ हैं।

हमारे लेखन में अपने से भिन्न विचार वालों की खिल्ली उड़ाना और तिरस्कार करने जैसा कुछ भी नहीं होना चाहिए अन्यथा हम उन्हें अपने विचारों के प्रति आकर्षित नहीं कर सकते। किसी के साथ घोषित शत्रुता या शुष्क वैर प्रदर्शित नहीं करना चाहिए। ऐसा करके हम किसी को अपना नहीं बना सकते।

पत्रकारिता, लेखन और सम्पादन यह भीरु कायर लोभी लालची सुविधा भोगी जनों का कार्य नहीं है। संवेदनहीन और दुष्ट चरित्र व्यक्ति इस कार्य के कदापि योग्य नहीं होते। इसके लिए लोगों को महर्षि दयानन्द के द्वारा सत्यार्थ प्रकाश में स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकरण में लिखी गई मनुष्य की परिभाषा और आर्य समाज के 10 नियम मार्गदर्शन के लिए पर्याप्त हैं। ***ध्यान रहे कि हमें संसार के लोगों को अपना और अपने विचारों का बनाने के लिए लिखना है किसी से बदला लेने या वैर निकालने के लिए नहीं। अपने और पराए किसी के लिए भी सत्य और न्याय को नहीं छोड़ना यही महर्षि दयानन्द का जीवन दर्शन है इसे कभी भूलना नहीं चाहिए।***

सा मा सत्योक्तिः परिपातु विश्वतः।।

– ✍ वेदप्रिय शास्त्री

दह्यन्ते ध्मायमानानां धातूनां च यथा मलाः।
तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषाः प्राणस्य निग्रहात्।।

– मनुस्मृति

जैसे अग्नि में तपाने से सुवर्णादि धातुओं का मल नष्ट होकर शुद्ध होते हैं वैसे प्राणायाम करके मन आदि इन्द्रियों के दोष क्षीण होकर निर्मल हो जाते हैं।

तुमको ही हे नाथ! पुकारें.....हो

वेद ऋचाओं से, मन के भावों से
तुमको ही हे नाथ! पुकारें.....हो
गम की आहों से, भरी निगाहों से,
केवल तेरी ओर निहारें....हो ।। १।।

तुम बिन अपना कौन है जिसको,
मन की व्यथा सुनाएं।
तुम सा दाता कौन है जग में,
जिसके दर पे जाएं।
सोच समझ कर, सबको तजकर,
आंचल तेरे द्वार पसारें..... हो ।।२।।

हम सब तेरे आश्रित केवल,
तू ही नाथ हमारा।
जीवन पथ पर, छोड़ न देना,
भगवन साथ हमारा।
अज्ञानी हम, अभिमानी हम,
तर न सकें जो आप न तारें .....हो ।।३।।

तू ही सब जग का मालिक है,
सबका भाग्य विधाता।
न्याय से तेरे, हर इक प्राणी,
कर्मों का फल पाता।
शीश झुकाएं हम, तव गुण गाएं हम,
कभी न तेरी याद बिसारें.... हो ।।४।।

हमें सुपथ से ले चल भगवन,
जीवन सफल बनाएं।
तेरी प्रेरणा के प्रकाश में,
हम शुभ कर्म कमाएं।
दया करो अब, दुख हरो सब,
"वेदप्रिय" के काज संवारें ..... हो।।५ ।।
वेद ऋचाओं से ....

–✍ वेदप्रिय शास्त्री

विकासवाद : लिपि और भाषा विकास का क्रम

— ✍ अखिलेश आर्येन्दु

पिछले दो अंकों में विकासवाद और नव विकासवाद पर विश्लेषण करने का प्रयास मैंने ' 'मूल निवासी और तथाकथित आक्रमणकारी आर्य' शृंखला के अन्तर्गत किया। विश्लेषण में मुझे कुछ विशेष बातों और विसंगतियों के सम्बन्ध में जानकारी हुई। पहली बात यह कि, डार्विन के विकासवाद पर वर्षों कोई ऐसा तथ्यपरक विश्लेषण या तर्क नहीं प्रस्तुत किया जा सका जिससे विज्ञान के सिद्धान्त और नियम को पूर्ण स्वीकृति मिलती। नव विकासवाद ने वर्षों बाद डार्विन के विकासवाद को विज्ञान के सिद्धान्त और नियम पर कसने का कार्य किया, लेकिन नव विकासवाद भी कई बातों पर सत्य और पूर्ण वैज्ञानिक तर्क व सिद्धान्त पर खरा नहीं उतर सका। जीव–जन्तुओं का विकास और उनकी स्थिति पर भी नव विकासवाद को अन्तिम सत्य नहीं घोषित किया जा सका। वेद का सृष्टि रचना का सिद्धान्त और नव विकासवाद में एक–दो मुद्दों पर ही एकरूपता दिखाई पड़ती है। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि वेद का सृष्टि निर्माण के सिद्धान्त को आँख मूँद कर मान लेना चाहिए। तर्क, तथ्य और प्रमाण की कसौटी पर वेद के सृष्टि निर्माण के सिद्धान्त को भी कसा जाना चाहिए। लिपि और भाषा विकास का सिद्धान्त वैसे नहीं है, जैसा जीव–वनस्पतियों के विकास का माना जाता है। मेरे विचार से लिपि और भाषा विकास को भिन्न तरीके से देखा जाना चाहिए। स्वाध्याय, गवेषणा और तथ्य–प्रमाण के अतिरिक्त तर्क की कसौटी पर भी इस सिद्धान्त को कसा जाना चाहिए। मान्यताओं और धारणाओं से ऊपर उठकर इस अति महत्वपूर्ण विषय को समझना आवश्यक है। शृंखलाबद्ध लेखों की कड़ी में यह लेख यदि पाठकों के अन्दर उत्सुकता और जिज्ञासा जगा पाया तो, मेरा प्रयास सार्थक माना जाएगा।

ऐसे समझें लिपियों के विकास को

अक्षर ध्वनि को लिपि कहा जाता है। अक्षर का अर्थ होता है जिसका कभी क्षरण न हो। ब्रह्म का भी कभी क्षरण या नाश नहीं होता, इस लिए अक्षर को ब्रह्म भी कहते हैं। विश्व में अनेक लिपियाँ हैं। इन लिपियों का विकास का क्रम किस तरह हुआ, यह अत्यन्त गम्भीर विषय है जिस पर उतनी ही गम्भीरता से गवेषणा होनी चाहिए। यह प्रमाणित हो चुका है कि आर्यावर्त भूखण्ड में सबसे पहले लिपि का ज्ञान ऋषि–मुनियों को हुआ। और उन्होंने क्रमशः इनका विकास किया। यह विकास भी अत्यन्त वैज्ञानिक और तार्किक है। लिपि का मतलब चिन्ह। हम कह सकते हैं जिन चिन्हों की सहायता से भाषा लिखी जाती है वे ही भाषा और लिपि विकासक्रम को व्यक्त भी करते हैं।

नये शोध से यह प्रमाणित हो गया है कि वैदिक वर्णमाला विश्व की सबसे वैज्ञानिक, सन्तुलित और सरल वर्णमाला है। यह वर्णमाला प्रकृति की ध्वनियों पर आधारित है। वैदिक ऋषि–मुनियों का मस्तिष्क कितना विकसित था, हमारी वर्तमान वर्णमाला से ज्ञात हो जाता है। हम कह सकते हैं कि जिन महा मानवों ने लिपि का आविष्कार किया वे अत्यन्त उच्च मेधा के थे। हमारी वैदिक वर्णमाला से ज्ञात होता है कि प्रकृति में जो कुछ भी है, वह नियमबद्ध है। बिना नियम के कुछ भी नहीं है। प्रकृति के नियमों से ज्ञात होता है कि इसके पीछे किसी नियन्ता का हाथ है। हम कह सकते हैं, प्रकृति में आस्तिकता है। और यह आस्तिकता किसी नियन्ता के कारण है। नियन्ता का मतलब प्रकृति के नियम नियन्त्रण में हैं। अनियन्त्रित कुछ भी नहीं। अब हम वर्णमाला के माध्यम से विकासक्रम को समझ सकते हैं। वैदिक वर्णमाला में मुख्यतः 17 अक्षर हैं। इन 17 अक्षरों में जो मात्र प्रयत्न से बोले जाते हैं अर्थात् जिह्वा को इधर–उधर हिलाने–डुलाने, सिकोड़ने और फैलाने से बोले जाते हैं और जिनका कोई विशेष स्थान निश्चित नहीं होता, उन्हें 'स्वर' कहा जाता है और जिनके उच्चारण में स्थान और प्रयत्न दोनों की सहायता लेनी पड़ती है, उन्हें 'व्यंजन' कहा जाता है–यह वैदिक वर्णमाला का सामान्य ज्ञान है, जिसे सबसे प्रथम जानना

चाहिए। वैदिक वर्णमाला में कुल 64 वर्ण हैं। इनमें अ, इ, उ, ऋ और लृ स्वर हैं, क, ख, ग, च, ज, ट, ड, त, द, प, ब, व्यंजन हैं और अनुसार व विसर्ग मध्यस्त हैं। यही 17 अक्षर परस्पर के मिश्रण और संयोग से 64 प्रकार के हो गए हैं। संयोग और मिश्रण को भी समझ लेते हैं। अ, अ, से आ और आ, अ से आ3 बना है। इसी प्रकार इ, उ, ऋ और लृ का भी विस्तार होता है। इन अक्षरों के मुख्यतः तीन भेद किए गए हैं जो ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत कहे जाते हैं। इन तीनों विभाजनों से इनके तीन–तीन भेद और हो जाते हैं। इस लिए अ से लृ तक इनकी संख्या 15 है और ए, ए3, ऐ, ऐ3, ओ, ओ3, औ, औ3 और अं अः मिलकर स्वरों की संख्या 25 हो जाती है। इनमें अ, इ, उ, द्ध और लृ मिश्रण से ऐ, अ और उ के मिश्रण से ओ तथा आ और ऊ के मिश्रण से ए, आ और इ के मिश्रण से ऐ, अ और उ के मिश्रण से ओ तथा आ व ऊ के मिश्रण से औ बना है। इसी प्रकार अ और –ं से अं, अ और : मिलकर अः बनता है। ञ, ण, न, ङ, म और ँ आदि समस्त सानुनासिक वर्ण अनुस्वार से और न, स, श ष वर्ण विसर्गों से बने हैं। विसर्गों में 'अ' जोड़ने से 'ह' बन जाता है। 'ह' अर्थात् विसर्गों का ही 'स' हो जाता है। और यही 'स' टवर्ग के साथ होने से 'ष' हो जाता है और च वर्ग के साथ होने से 'श' बन जाता है। यहा ध्यान देने वाली बात यह है कि अन्य व्यंजन वर्णों की उत्पत्ति संयोग से होती है। जैसे क, ग, च, ज, ट, ड, त, द, प, और ब में 'ह' जोड़ने से क्रमशः ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, फ, और भ हो जाता है। इ और य मिलकर 'य' ऋ व अ का संयोग होता है तो र, ल व अ के संयोग से ल और उ व अ मिलकर 'व' बनाते हैं। इसी प्रकार अन्य वर्ण भी संयोग और मिश्रण से बने हैं। जैसे, क, ष, से 'क्ष' त, र से 'त्र' और ज व ञ मिलकर 'ज्ञ' बनाते हैं। इस प्रकार 25 स्वर के, 25 वर्ग के और (य, व, र, ल, श, ष, स, ह, क्ष, त्र, ज्ञ, ग्वंम् (विशेष वैदिक चिन्ह) ँ और ळ आदि) 13 स्फुट को मिलाकर 63 अक्षर बनते हैं और इन्हीं में अर्ध चन्द्र सम्मिलित करने से कुल 64 हो जाते हैं। ध्यान रहे, इन 64 अक्षरों का मूल 17 अक्षर ही हैं। अब आइए, हम लिपि या वर्णमाला के सम्बन्ध में उसकी उत्पत्ति की कहानी जान व समझ लें। हमारी वर्णमाला का प्रथम अक्षर 'अ' है। प्रकृति में प्रत्येक वस्तु गतिशील है। वर्ण 'अ' में जब गति उत्पन्न होती है तो 'इ' बन जाती है। और इसी 'अ' के परिवर्तन से कुल 17 वर्णों का निर्माण होता है। और जैसे–जैसे पविर्तन होता जाता है, यह बढ़ते–बढ़ते 64 वर्णों तक जाता है। प्रत्येक वर्ण में 'अ' उपस्थित रहता है। 'अ' की उत्पत्ति हमारे मुख के विशेष स्थितियों में खुलने और इसके बनावट से समझ सकते हैं। 'अ' साधार और सार्थक है। 'अ' की पहचान हम मुख के खुलने से कर सकते हैं जैसे जब हम 'अ' बोलते हैं तो हमारा मुख चारों ओर बराबर खुलता है। और 'अ' के ऊपर जो दण्डा लगा हुआ है वह इसके उच्चारण से पहचान सकते हैं। हम जब 'अ' का उच्चारण करते हैं तो मुख से हवा दण्ड के रूप में निकलती है। यह दण्ड बताता है कि बिना आधार के कुछ भी सम्भव नहीं हैं । इसे हम वर्ण माला से भी समझ सकते हैं। वर्णमाला के सभी अक्षर एक आधार अर्थात् दण्ड से सम्पृक्त हैं। इससे ज्ञात होता है कि सृष्टि का विकास बिना किसी आधार के नहीं हो सकता। 'अ' के दो अर्थ हैं–अभाव और भाव। अभाव से 'अ' पृथक कर दे ंतो भाव बन जाता है। और 'आ' जहाँ लगाया जाता है वहाँ पूर्णता आ जाती है। जैसे आपूर्ण अर्थात् पूर्णता को प्राप्त। आजन्म अर्थात् कई जन्मों तक। इसी प्रकार 'इ' का अर्थ गतिर्थक है। इसकी बनावट सर्प जैसे है। इससे ज्ञात होता है कि जिन वस्तुओं में गति होगी वे 'इ' अर्थ वाले होंगे। एक उदाहरण से वर्णों और शब्दों की उत्पत्ति समझ सकते हैं। जैसे एक शब्द है 'खग'। खग का अर्थ होता है पक्षी। अब हम जब खग शब्द और पक्षी के सम्बन्ध को ढूढते हैं तो निम्न बातें सामने आती हैं। वर्ण 'ख' का अर्थ होता है अन्तरिक्ष, आसमान या आकाश। वर्ण 'ग' का अर्थ संस्कृत धातु में पाया जाता है–गति। अब दोनों को मिला कर देखें तो पाते हैं कि जो आकाश में गति करे, वह कुछ और नहीं, खग या पक्षी है।

वैदिक वर्णमाला की वैज्ञानिकता का सबसे बड़ा कारण इसका अपौरूषेय होना है। वैदिक ग्रन्थों में इसका सूत्रबद्ध वर्णन किया गया है। जैसे छान्दोग्य उपनिषद् में 'सत्य' शब्द जो 'स', 'त' और 'य' से बना है की उत्पत्ति बताते हुए कहा गया है –

तानि सत् एतानि त्रीण्यक्षराणि 'सतियमिति'

सद्यत् सत् तदमृतमथ यत् ति तन्मर्त्यमथ यत् यम् तेनोभे

यच्छति।

अर्थात् 'सत्य' शब्द के तीन अक्षरों में से 'स' का अर्थ अमृत, 'त' का अर्थ मर्त्य और 'य' का अर्थ दोनों को नियम में रखने वाला है। इसी प्रकार ब्राह्मणग्रन्थों में अनेक नमूनों का वर्णन किया गया है। उदाहरण के लिए गोपथ ब्राह्मण में 'भर्ग' शब्द की उत्पत्ति और अर्थ बताते हुए लिखा गया है – भ, इति भासयतीतीमांल्लोकान्। र, इति रञ्जयतीतीमांल्लोकान्। ग, इति गमयतीतीमांल्लोकान्, इत भर्गः।

अर्थात् 'भ' से भासित होना, 'र' से रञ्जित होना और 'ग' से गमन करना होता है। इसी प्रकार अन्य अनेक शब्दों का ब्राह्मण ग्रन्थों, निरुक्त और उपनिषदों में विवेचना की गई है। इसी प्रकार का अर्थ 'नाक' शब्द का निरुक्त शब्द का बताया गया है। निरुक्त में 'कान' शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए कहा गया –सुखनाम, तत् प्रतिषिद्धं प्रतिषिध्येत्' अर्थात् 'क' का अर्थ सुख है। सुख का निषेध करने वाला 'अ' है और 'अ' का निषेध करने वाला 'न' है। इस प्रकार नाक नाम सुखस्थान–स्वर्ग बताया गया है। विभिन्न ग्रन्थों में अनेक अक्षरों के अर्थ बताए गए हैं। इन अक्षरों के अर्थ जान लेने के बाद लिपि और भाषा विकास को समझने में कुछ आसानी हो जाती है। 'अ' से प्रारम्भ करके ह तक के अनेक अक्षरों के अर्थ से ज्ञात होता है कि देवनागरी अक्षरों की उत्पत्ति असाधारण है। कुछ विशेष अक्षरों के अर्थ जान लेने के बाद हम भाषा विकास को ठीक–ठीक समझने की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। जैसे, अ का अर्थ नहीं, आ– अच्छी प्रकार, ई–गति, उ–और, ऋ–गति, लृ–गति, क–सुख, ख–आकाश, ग–गति, च–पुनः, ज–उत्पन्न होना, झ–नाश, त–पार, थ–ठहरना, दा–देना, धा–धारण करना, न–नहीं, पा–रक्षा करना, भा–प्रकाश करना, मा–नापना, य–जो, रा–देना, ल–लेना, वा–गति, स–साथ और ह–निश्चय अर्थ करना। कैसे अक्षरों से वस्तुओं और विषयों का ज्ञान हमारे वैदिक ऋषि–मुनि कर लेते थे, इसे जानना आवश्यक है।

आज जिस अक्षर से जो अर्थ निकलता है वही अर्थ वैदिक वर्णों की उत्पत्ति के समय भी निकलता था। और वंश परम्परा से यह विद्या आगे बढ़ती जाती थी। इसमें योग का बहुत महत्व है। जिस अक्षर का जो अर्थ होता है उस अक्षर का उसी शैली में अर्थ की परम्परा आगे बढ़ती रही, इस लिए अक्षरों के अर्थ नहीं परिवर्तित हुए। ऐसा माना जाता है कि भाषाविद हमारे ऋषि–मुनि धातुओं के आए हुए वर्णों में संयम रखते थे और प्रत्येक वर्ण का अर्थ स्थिर कर लेते थे। और स्थिर किए हुए अर्थ का ज्ञान एक–दूसरे तक पहुंचाने से यह विद्या सुरक्षित चली आई, जैसे वेद मन्त्रों को सुनकर उन्हें समरण रखना और उन्हें आगे आने वाली पीढ़ी को निरन्तर बताते जाना।

इस तथ्य से कोई असहमत नहीं हो सकता कि अक्षरविज्ञान जानने के लिए धातुओं और प्रत्ययों में संयम करने की आवश्यकता है। योगशास्त्र में लिखा है–'शब्दार्थप्रत्ययानामितरेतराध्यात्संकरस्तत्प्रविभागसंयमात् सर्वभूतरुतज्ञानम्'। अर्थात् शब्द, अर्थ और प्रत्ययों के संयोग–विभागों में संयम करने से समस्त प्राणियों की भाषाओं का ज्ञान हो जाता है। हम यह जानते हैं कि जिस प्रकार धातु, प्रत्ययों में संयम करने से मनुष्य को भाषा के प्रत्येक वर्ण अर्थों का बोध होता है उसी प्रकार प्रत्येक प्राणी की भाषा में संयम करने से प्रत्येक प्राणी की भाषा का ज्ञान हो जाता है। यह जानना आवश्यक है कि बिना धात्वार्थ के और बिना अक्षरार्थ के भाषा का ठीक–ठीक ज्ञान नहीं हो सकता। एक–एक अक्षरों का अर्थ जानने के लिए आवश्यक है कि किन कारणों से उनकी धातुओं का–वर्णों का, अक्षरों का अमुक अर्थ होगा। इसी प्रकार भाषा की वैज्ञानिकता, उसकी अपौरुषेयता और ईश्वर प्रदत्त सिद्ध करने के लिए भाषा और अक्षरों का संयम करना अति आवश्यक है।

वैदिक लिपियों की अनेक विशेषताओं में एक विशेषता उसका वैज्ञानिक और सरल होना है। वेद के प्रत्येक अक्षर का अर्थ उसकी बनावट से ज्ञात हो जाता है। अक्षरों की बनावट दो प्रकार की है। एक तो वह बनावट है जो मुँह में अक्षरों के उच्चारण करते समय बनती है और दूसरी वह है जो लिखते समय लेखनी से रेखारूप होकर काग़ज़ में चित्रित होती है। पहली मुख्य है और दूसरी साक्षी है। साक्षी से यह ज्ञात होता है कि मुख की बनावट स्थिर करने में धोखा तो नहीं हो रहा। यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि मुँह से निकलते समय जो अक्षर अपना जो–जो भाव, बनावट, ध्वनि, प्रभाव और क्रिया करता है, उसी से उसका अर्थ निश्चित होता है। इसी प्रकार उस अक्षर के चित्र, रेखा, बनावट और प्रभाव से जो भाव उत्पन्न होता है, वह प्रथम कहे हुए अर्थ का पोषक होता है। उदाहरण के लिए 'अ' का अर्थ अभाव है। अभाव का चित्र 0 शून्य से अच्छा दूसरा नहीं हो

सकता। इसी प्रकार अन्य अक्षरों के अर्थ और बनावट से उसे समझा जा सकता है। इसे विकासवाद कहेंगे, जहाँ लिपि (अक्षर) का भाव और बनावट निश्चित है। इस प्रकार की वैज्ञानिकता अन्य किसी लिपि या अक्षर में द्रष्टव्य नहीं होता है।

वैदिक वर्णमाला के स्वर और व्यंजन दोनों अक्षरों की ध्वनि के अर्थ, उसकी बनावट, लिखावट और उच्चारण से किसी भी अक्षर और शब्द का अर्थ सहजता से समझा जा सकता है। उदाहरण के लिए सानुनासिक अक्षर मूर्द्धाछिद्र से बोले जाते हैं। उस छिद्र को '0' से प्रकट करते हैं। इसी तरह न, म, ण, आदि सानुनासिक अभाव अर्थ वाले वर्ण कहे जाते हैं, अतः अभाव के लिए '0' से अभिव्यक्त किया जाता है।

हम जब लिपियों की बात करते हैं तो ज्ञात होता है कि देवनागरी के पूर्व वैदिक लिपि ब्राह्मी रही है। ब्राह्मी लिपि में धीरे–धीरे परिवर्तन हुआ। परिवर्तन का क्रम निरन्तर चलता रहा और परिवर्तित होते–होते यह आज जिस रूप में लिपि के चिन्ह हमारे सामने हैं, वहाँ तक आ पहुँचा। अक्षर (लिपि) का विकास ब्राह्मी और देवनागरी में एक विशेष क्रम से हुआ। इस क्रम को समझना आवश्यक है। दूसरी बात यह है कि कोई भी लिपि किसी वर्ण या जाति–विशेष की कभी नहीं रही। आवश्यकता के अनुसार लिपियों का विकास हुआ और जन सामान्य ने इनका लिखने में प्रयोग किया। इस अंक में बस इतना ही।

आर्ष क्रान्ति पत्रिका के लिए आर्य लेखक बन्धु अपनी सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ भेंजे।

आर्ष क्रान्ति के सुधी पाठकों से

समाज सुधार, संस्कृति उन्नयन और धर्म जिज्ञासा क्षेत्र की अनेक पत्रिकाएं सोशल मीडिया पर आपने देखी और पढ़ी होगी । आर्ष क्रांति पत्रिका का तेवर और स्वरूप कैसा है इसे जानने की जिज्ञासा आपके मन में पैदा होती है, तो यह समझना चाहिए आप एक विचारवान और जिज्ञासु किस्म के बुद्धिमान व्यक्ति हैं । हमें आप जैसे क्रांतिकारी और प्रगति गामी विचारवान व्यक्ति का साथ चाहिए। फिर देर किस बात की । नीचे लिंक पर जाइए और फार्म भर कर हमें भेज दीजिए। अब आप जुड़ गए हैं ऐसी संस्था और पत्रिका से जो एक आदर्श समाज, उन्नतशील संस्कृति और मानव मूल्यों के धर्म की स्थापना के लिए कृतसंकल्प है । आप एक शुभ संकल्पवान व्यक्ति हैं और यह पत्रिका भी शुभ संकल्पों को मूर्त रूप देना चाहती है, एक आदर्श समाज निर्माण में हमारी संस्था और पत्रिका से जुड़कर आप अपना अमूल्य योगदान दे सकते हैं । आपका हमें इंतजार रहेगा।

इस लिंक पर क्लिक करके यह फार्म अवश्य भरें

http://bit.ly/aarshkranti

नोट – फॉर्म को भरने के लिए अपने मोबाइल / कंप्यूटर में इन्टरनेट अवश्य चालू रखे

FIFTH DUTY : HOSPITALITY TO THE HELPLESS

– ✍ Dr. Roop Chandra 'Deepak'
Lucknow (U.P.)
Mob. 9839181690

An ordinary man's attitude is to respect a resourceful and useful person and to discard those not indispensable. But a noble man regards both of them. He takes benefit politely and dispenses courteous behaviour to all. He does not limit his duties only upto his relations, benefactors and clients. He rather regards each and every being as his associate and tries to live all beings.

A capable house-holder is surrounded by a crowd of helpless men and animals who cannot live by themselves. So it is one of his duties to share their burden of life, and help them live along. The helpless beings cannot take any action if we tease them, but we should not opt this way. They may or may not help us but we must help them.

The helpless beings include the servants and labourers, the homeless and poor people, the lepers, blind, deaf and other uncared persons, the orphans, the domestic animals, the birds and other beasts. They are not capable enough of living by themselves. So, it is our duty to care for them. For, real nobility lies in hospitality to the helpless and kindness to the animals.

Poverty is the deepest sorrow. It pricks every moment, and burdens every breath. The sun of happiness never shines and the night of misery never ends for the poor. They do not understand what the rights are. They do not meet the basic necessities to stand up and perform human duties. If man is free to choose one out of death and poverty, he would like to choose the former; but he is internally bound to choose the latter.

Most of the poor are homeless. Since man needs to stay and take rest for eight to ten hours daily, he requires a place for it. So, they occupy some place legally or illegally, for legality bears no meaning for them. Such people need help of the capable, and they must be helped.

The servants and labourers are not so helpless because they possess immense power to stand and walk. They give labour, sweat and service to the capables, and take money in lieu thereof. But money cannot be the price for service. So, they must be dealt with love, sweetness and a sense of human equality. It is inhumane to enslave them and sinful to exploit them. They depend upon the capables and vice-versa. So,

this is rather a business of give and take that should be undertaken dutifully and gracefully.

Sickness is a sister of poverty, that makes the living lifeless. When it enters in well-to-do families, it is not so dreadful. But the homeless and poor people get drowned when they have it, and they cannot find way out by themselves. They need help and care from the capable house-holders.

The lepers, the blind, the deaf, the dumb, and other sick persons, having no money or home, are all humans, and tender liability of society. Such people are kept in Government hospitals and it is good. But the medicines supplied to Government hospitals through corrupt machinery, are many a time unconsumable.

These handicapped persons may be engaged in community jobs with a view to helping them and not to exploiting them. The schools and hostels of such children are socially neglected, and left at the mercy of paid managers who are not necessarily good and humane. So, they need a continuous care of philanthropic society.

What needed most is the human touch. The people of the category under review should never be looked down upon. They are our brothers. We should feel like this and behave with them so affectionately that they should also regard us as their brothers or parents.

The practice of begging has its origin in the Vedic Culture, but the spirit has deteriorated and reached the reverse end. Originally, the men of knowledge and austerity, living and working for the whole society, did not indulge in earning money. In reciprocity they were respected, honoured and served with food, clothing and lodging whenever necessary. Thus the general sociey enjoyed the role of intellectuals and pioneers at a very small cost of bare necessities.

As the days rolled by, like many noble things, the divine spirit of begging also deteriorated and took the form of beggary today. Now a beggar evades labour, escapes from work, and take the shelter of begging, not the least for social contribution but simply for an easy bread. Such a beggar is not a social liability but a heavy burden on society.

To take disadvantage of the people's generosity, some people have developed beggary into a trained profession. Such people should be severely dealt with. But the helpless beggars, and particularly the child beggars should be saved from beggary, engaged in some earning occupation, and helped to lead a life that may be meaningful for them and burdenfree for the society. This needs care of the intelligentsia, the volunteers and the competent house-holders.

Every child has parents but some are deprived of them. There are illegitimate

children who are deserted by their parents. This is also caused by economic hardship, divorce or natural mischief. Such children are helpless, homeless and lifeless for no apparent fault of theirs. It should be noted that children are never illegitimate. The illegitimacy is wholly on the parental side. It should also be noted that men and women are free to get married or not; but they are not free at all to desert or neglect the children born to them.

Compelled to become orphans, the children or the aged persons deserted otherwise, are a liability of the society. The capable house-masters should make arrangements for their bread, clothing, collective shelter, basic education and training, and medical care. They are also the members of our family, no matter if not our kith and kin. We have to contribute for them from our pockets.

It is good that many an orphanage is working in the society. But there are problems of neglect, shortage, indiscipline, maltreatment and exploitation of many kinds. Some managers are running the orphanage on commercial lines. In fact, the orphanage is a philanthropic service. If the managers are good, they are serving the purpose. But if otherwise, they are a hell in disguise. So, the orphans need a vigilant care of the noble society.

By all means, hospitality to the helpless is an essential duty of the house-holders under Vedic Society.

वेदोपनिषदम्

ऋग्वेदरूप वाणी

- ऋग्वेदरूप प्रशंसनीय वाणी में चार दोष नहीं होते हैं। और दोनों गुण होते हैं।
- मनुस्मृति :अध्याय-१२, श्लोक-६००२०:-
  पारुष्यमनृतं चौव पैशुन्यं चापि सर्वशः।
  असम्बद्ध प्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम।।

[कठोर बोलना, असत्य बोलना, निन्दा- चुगली करना और असम्बद्ध प्रलाप करना, वाणी के ये चार दोष हैं।]

- असत्य बोलना वाणी का सबसे बड़ा पाप है।
- श्लोक में पहले पारुष्य कहा गया; यह तो छन्द के कारण है।
- बच्चों के सामने असत्य बोलना; माता-पिता के सामने बोलना; विद्यालय में असत्य बोलना; न्यायालय में भी असत्य बोलना; ये पाप के बढ़ते स्तर हैं।
- असत्य बोलकर मनुष्य वेद का विद्वान् नहीं बन सकता; ईश्वर को प्राप्त नहीं कर सकता; स्थायी सुख-शान्ति नहीं पा सकता।
- कठोर बोलना दूसरा पाप है; इसे असभ्यता भी कह सकते हैं; यह साहस या वीरता नहीं है; इसे दूर करना बुद्धिमानी है।
- निन्दा-चुगली करना भी पाप है; निन्दा को सत्यभाषण मत कहिए; दोष को सुधारना तो धर्म हैय किन्तु दोष को प्रसिद्ध करना धर्म नहीं है।
- चुगली शिष्ट आचरण के विरुद्ध है और आत्म-बल को भी घटाती है।
- गलत समय, गलत स्थान पर, अनावश्यक बात कहना या जोर से बोलना असम्बद्ध प्रलाप है।
- मनुस्मृति :अध्याय-४, श्लोक-१३८:-

सत्यं ब्रूयात्प्रियं ब्रूयान्न
ब्रूयात्सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयाद्
एष धर्मः सनातनः।।

[सत्य बोलो; प्रिय बोलो; अप्रिय सत्य मत बोलो; असत्य प्रिय मत बोलो;वाणी का यही सनातन धर्म है।]

- हे ईश्वर! मेरी वाणी को चारों दोषों से मुक्त कीजिए और दोनों गुणों से युक्त कीजिए।

– ✍ आचार्य रूपचन्द्र 'दीपक'

वेदों में संनिहित है – भौतिक विज्ञान

– डॉ. विक्रम कुमार विवेकी

वेद ज्ञान–विज्ञान के अक्षय भण्डार हैं। यह उक्ति या तथ्य अक्षरशः सत्य है। ज्ञान–विज्ञान के प्रत्येक भाग का वर्णन वेदों में संनिहित है। अभी तक मानव मन, चेतना, बुद्धि और विवेक ने वेदों में जितना ज्ञान–विज्ञान खोजा है वह मानव की अपनी खोज है। वेदों में ज्ञान–विज्ञान का अथाह भण्डार है। जिस ऋषि–मुनि, गवेषक, साधक, योगी और साक्षात्कार–कर्ता ने जितना वेदों में विज्ञान खोजा है, उससे ही यह पता चलता है कि वेद ज्ञान–विज्ञान के सिन्धु हैं। वेदों में निहित ज्ञान–विज्ञान को जिस युग में जितना खोजा है, उसी के अनुरूप, उस युग में विज्ञान की उतनी उन्नति हुई। आधुनिक युग में विज्ञान ने खूब उन्नति की है। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहाँ विज्ञान का परचम फहरता न दिखाई दे रहा हो। लेकिन आधुनिक विज्ञान की उन्नति की दिशा हिंसात्मक और अहिंसात्मक है। यह वेद से इतर है। शान्ति और अशान्ति दोनों ओर है। इस लिए विश्व में मानव सभ्यता के विध्वंसकारी स्वरूप की धारा निरन्तर द्रष्टव्य होती रहती है। वहीं पर वेद में निहित ज्ञान–विज्ञान सर्वदा और सर्वथा शान्तिप्रिय और अहिंसात्मक है। शुभत्व और आनंद को बढ़ाने वाला है। वेद में भौतिक विज्ञान का स्वरूप कैसा है, यह संक्षिप्त लेख से समझा जा सकता है। प्रस्तुत लेख के लेखक डॉ. विक्रम कुमार विवेकी वेद, दर्शन और संस्कृत के विख्यात विद्वान् हैं। आशा है लेख पसन्द आएगा।

–सम्पादक

महर्षि दयानन्द के मन्तव्यानुसार वेदों में सब सत्य विद्या और पदार्थ विद्याओं का मूल है। '**सर्वज्ञानमयो हि सः**' कहकर मनु ने भी वेदों को सब ज्ञान–विज्ञानों का स्रोत बतलाया है। भौतिक विज्ञान से सम्बद्ध कुछ वैदिक ऋचाएँ अनुसन्धेय हैं। पाश्चात्य विद्वानों ने अग्नि, सोम, मित्र, वरुण, इन्द्र, अदिति, दक्ष, अश्विनौ आदि वैदिक शब्दों की एकांगी व्याख्या करके इन शब्दों के यौगिक, पारिभाषिक अर्थों की घोर उपेक्षा की, जिससे वेदों के विषय में यह मान्यता फैली कि वेदों मेंकुछ विशिष्ट देवताओं की प्रशंसा मात्र है। देवस्तुति, अध्यात्म, यज्ञ व कुछ प्ररेक ऋचाओं के अतिरिक्त इन में और कुछ नहीं हैं। लोगों के पूर्वाग्रहों ने भी उन्हें वेदों से बहुत दूर रखा। भौतिक विज्ञान से सम्बन्धित कुछ ऋचाओं का संकेतमात्र यहाँ प्रस्तुत है –

परमाणुओं में आकर्षण शक्ति होती है समस्त परमाणु एक दूसरे को अपनी ओर खींचते हैं–

एको अन्यत् चकृषे विश्वम् आनुषक्।

(ऋग् 1/52/14)

प्रो. आइनस्टाइन का सिद्धान्त है– मास और एनर्जी नित्य पदार्थ हैं। इनका पारस्परिक रूपान्तरण होता रहता है–द्रव्य ऊर्जा के रूप में और ऊर्जा द्रव्य के रूप में। ऋग्वेद में अदिति और दक्ष शब्दों से क्रमशः द्रव्य और ऊर्जा की ओर संकेत है– *अदितेर्दक्षो अजायत दक्षाद् उ अदितिः परि। (ऋग् 10/72/4)*

सूर्य की समस्त संसार की ऊर्जा का स्रोत है। वेदों में सूर्य को जड़ व चेतन जगत् की आत्मा कहा गया है।

सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च। (1/115/1)

सूर्य की सात रंग की किरणें होती हैं।

सप्त सूर्यस्य रश्मयः। (अथर्व. 7/107/1)

यजुर्वेद में सौर ऊर्जा के उत्पादन का उल्लेख है। वसु नामक वैज्ञानिक सूर्य से अश्वशक्ति अर्थात् सौर ऊर्जा को निकाल सकते हैं –

सूराद् अश्वः सववो निरतष्ट। (यजु. 29/13)

सूर्य में जो आकर्षण शक्ति है उसी से वह पृथ्वी को आकृष्ट किये हुए है।

सविता यन्त्रैः पृथिवीम् अरम्णात्। (ऋग् 10/149/1)

सूर्य में हाईड्रोजन व हीलियम विद्यमान है। सूर्य में जो ऊर्जा है उस का स्रोत सोम तत्त्व है –

सोमेन आदित्या बलिनः। (अथर्व. 14/1/2)

सूर्य की सुषुम्णा नामक किरण चन्द्रमा का प्रकाशक है –

सुषुम्णः सूर्यरश्मिः चन्द्रमा गन्धर्वः। (18/40)

पृथ्वी सूर्य की प्रदक्षिणा करती है–

आयं गौः पृश्निः अक्रमीत्। (यजु.3/6)

क्षाः———शुष्णं प्रदक्षिणित्। (ऋग् 10/22/14)

सूर्य सहित सारा संसार घूमता है–

समाववर्ति पृथिवी समुषाः समु सूर्यः।
समु विश्वमिदं जगत्।। (यजु0 20/23)

वैदिक 'अग्नि' शब्द ऊर्जा का भी बोधक है। ऊर्जा अविनश्वर होती है, वह 'वयम्' नामक शक्ति से ही अनश्वर है –

अग्निरमृतो अभवद् वयोभिः। (ऋग् 10/45/8)

ऊर्जा विश्वव्यापी है–

दिवं पृथिवीम् अनु अन्तरिक्षम्। (अथर्व.3/21/7)

शिल्प विद्या, यान–निर्माण, विद्युत्कोप, अग्नि, शक्ति इन्द्र नियन्त्रण, रसायन–विद्या, धनुर्विद्या, ज्योतिष व गणित विद्या आदि समस्त विद्याओं का वर्णन वेदों में विद्यमान है। अश्व के नाम से विद्युत शक्ति का जो वर्णन ऋग्वेद में उल्लिखित है उस की चर्चा स्वामी दयानन्द करते हैं–

अश्वं न त्वा वारवन्त वन्दध्या अग्नि नमोभिः।।
वृषो अग्निः समिध्यते अश्वो न देववाहनः।
तं हविष्मन्त ईळते।। (ऋग्. 1/27/1, 3/27/14)

ऋचा का अर्थ द्रष्टव्य है। ऋग्वेद की पहली ऋचा में ही अग्नि के लिए जो पुरोहित, यज्ञस्य देव, ऋत्विक होता व रत्न–धातम आदि महत्वपूर्ण विशेषण पठित हैं। इन्हीं पर ही अध्यात्मपरक एवं भौतिकपरक वैज्ञानिक व्याख्या पर पूरी थीसिस लिखी जा सकती है। पंण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी जो एक भारतीय लघु वयस्क विज्ञान के पण्डित थे, उन्होंने भी अपने 'वैदिक संज्ञाविज्ञान' आदि निबन्धों में वैदिक ऋचाओं के आधार पर विज्ञान के विभिन्न रहस्यों का खुलासा किया है। ऋग्वेदीय नासदीय–सूक्त एवं अनुपम हैं। इस प्रकार वैज्ञानिक सत्यों व तथ्यों के रहते हुए भी यदि वेदों की उपेक्षा, निन्दा या अवज्ञा की जाती है तो यह आत्म–विडम्बना ही है। निरुक्तकार यास्क ने सही लिखा है–

नैष स्थाणोरपराधो यदेनमन्धो न पश्यति।
पुरुषापराधः स भवति।।

यदि अन्धा व्यक्ति चलते हुए ठूंठ को नहीं देख पा रहा है और वह टकरा जा जाता है तो इस में ठूंठ या खम्भे का कोई दोष नहीं होता, सारा दोष पुरुष का ही होता है। वेदों के सन्दर्भ में भी यही सत्य है।

ऋषि दयानन्द की वाणी ने आलोकित किया जगत् सारा

सत्यार्थ प्रकाश के रूप में जग को दिया नया एक ध्रुव तारा।
ऋषि दयानन्द की वाणी ने आलोकित किया जगत् सारा।

बहुदेववाद का खण्डन कर, है ईश्वर एक यह ज्ञान दिया।
विधवा विवाह को प्रोत्साहन, नारी शिक्षा को मान दिया।
गौरव चाहो तो बस वेदों की ओर चलो था यह नारा।
ऋषि दयानन्द की वाणी ने आलोकित....

खण्डन कर बाल विवाह और फिर जाति प्रथा के बन्धन को,
अपने भाषण से जगा दिया निद्रा में पड़े हिन्दू मन को
स्थापित आर्य समाज किया बदली हिन्दू चिन्तन धारा।
ऋषि दयानन्द की वाणी ने आलोकित....

दे राष्ट्रवाद का भाव चलाया शुद्धि आन्दोलन नूतन
यह कहा मूल है शिक्षा का वैदिक शिक्षा वैदिक दर्शन
विद्यालय जगह–जगह खोले फैला शिक्षा का उजियारा।
ऋषि दयानन्द की वाणी ने आलोकित....

– ✍ सुशील सरित
आगरा (उ.प्र.)

महर्षि दयानन्द : वेद, समाज और संस्कृति के युगदृष्टा ऋषि

— ✍ अखिलेश आर्येन्दु

आर्यसमाज के संस्थापक और वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द को वेदों के प्रति अटूट विश्वास तो था ही, वे वेदों को ईश्वरीयवाणी और अपौरुषेय भी मानते हैं। वेदों को सनातन का चिर नवीन ज्ञान–विज्ञान, धर्म, अध्यात्म, दर्शन और मानव मूल्यों का उद्‌गम भी मानते हैं। वे सत्य के अजेय पथ के पथिक हैं तो समाज सुधार के सर्वश्रेष्ठ नेतृत्वकर्ता भी। अज्ञानता, पाखंड, बुराइयों और गंदी परम्पराओं पर चोट करते हैं तो ज्ञान, तर्क, विज्ञान, विद्या और धर्म को विवेचनात्मक मीमांसक के रूप में दिखाई देते हैं। वे धर्मवेत्ता हैं तो वैदिक राष्ट्रवाद के उन्नायक का कार्य भी करते हैं। दलित, पिछड़ों और अनार्थों को ज्ञान के रास्ते पर चलने के लिए संघर्ष करने वाले आंदोलनकारी हैं तो, हिन्दी, संस्कृत, देवनागरी को राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित करने वाले संस्थापक भी हैं। महिलाओं को पुरुषों के बराबर वेद पढ़ने और शिक्षा हसलि करने का हक दिलाने के लिए वेदों को आधार बनाते हैं और विधवाओं को उनकी दुर्दशा से निकालकर उन्हें समाज में सम्मान सहित जिन्दगी बसर करने के लिए विधवा विवाह को शास्त्र सम्मत साबित करते हैं। ईसाइत की शिक्षा और अंग्रेजी भाषा के मोहजाल से बाहर करने के लिए वैदिक गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति को राष्ट्र स्तर पर स्थापित करने का भागीरथ प्रयत्न दयानंद के जरिए ही किया गया। सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सहित चालिस पुस्तकों की रचना और अनेक शास्त्रार्थों के जरिए शास्त्रार्थ की वैदिक परम्परा को पुनः स्थापित करने का कार्य आदि शंकराचार्य के बाद महर्ष दयानन्द ने ही किया।

महर्षि दयानन्द ने धर्म, अध्यात्म, भाषा, देश सेवा, समाज सेवा, ज्ञान–विद्या का प्रचार–प्रसार सहित समाज, संस्कृति, धर्म और अध्यात्म को विकास के रास्ते पर आगे बढ़ाने वाले उत्तम कार्यों को यज्ञ कह कर सुकर्म की प्रतिष्ठा की। सत्य, ज्ञान–विज्ञान और सत्य धर्म की स्थापना का कार्य उन्होंने भारत में प्रचलित सभी मत पंथों की निष्पक्ष समीक्षा करके भारत में पहली की। यही कारण है समाज में प्रचलित 'सभी धर्म समान हैं और सभी धर्म ग्रंथ' बराबर हैं के विश्वास को तर्क और तथ्य की कसौटी पर कसा।

महर्षि दयानन्द नामधारी किसी मत–पंथ, सम्प्रदाय या संस्था की स्थापना करने के पक्षधर नहीं थे। उन्होंने अनेक समाज सुधारकों के कहने पर आर्यसमाज के जरिए आन्दोलन चलाया जो बाद में चलकर एक संस्था के रूप में पहचाना जाने लगा। आर्यसमाज ने सबसे बड़ा कार्य जन्मगत जाति व्यवस्था को खत्म कर कर्म, गुण व स्वभाव के आधार पर समाज में प्रत्येक व्यक्ति की पहचान हो, को स्थापित करने के लिए वेदों को आधार बनाया। इसी तरह वैदिक परम्परा में प्रचलित चारों पुरुषार्थों, चारों आश्रमों और चारों वर्णों को वैदिक परम्परा और धर्म के आधार पर मान्यता दिलाने के लिए जीवन भर संघर्ष करते रहे। आर्य समाज के दस नियमों में उन्होंने जहां ईश्वर, वेद और सत्य की प्रतिष्ठा दी है वहीं पर वेदों को पढ़ने–पढ़ाने, सुनने–सुनाने तथा धर्म के रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित किया है। अपनी उन्नति के लिए शारीरिक, ासमाजिक और आत्मिक उन्नति को जरूरी बताया तो दूसरे की उन्नति में अपनी उन्नति समझने का मानवीय सद्‌गुण को भी अपनाने पर जोर दिया। मानव मूल्यों की स्थापना के लिए उन्होंने अपने जीवन को संदेश के रूप में पेश किया। उन्होंने अपने विरोधियों, हत्यारों और नफरत करने वालों से कभी प्रतिक्रिया नहीं की। जिसने जहर दिया उसे ही क्षमा करते हुए धन देकर दूर भाग जाने के लिए कहकर क्षमा को मूर्तिमान कर दिया। हिन्दी और देवनागरी को भारत के जनमानस की धड़कन बनाने के लिए तत्कालीन शासन को प्रेरित करते रहे। गुजराती होते हुए भी हिन्दी और देवनागरी को प्रतिष्ठिा देकर उन्होंने लोगों को हिन्दी और देवनागरी की महत्ता को बताया।

महर्षि दयानन्द संसार को श्रेष्ठ और सुन्दर बनाने के

लिए वेदों में वर्णित मंत्रों को जनमानस में प्रचलित किया। उन्होंने वेद मंत्र को जन–जन में प्रचलित करने के मकसद से 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम' यानी संसार को श्रेष्ठ या आर्य बनाने का आह्वान किया। आज जबकि दुनिया में आतंक, हिंसा, स्वार्थ, भ्रष्टाचार, व्याभिचार, यौन–अपराध, विश्वासघात और गैरबारबरी बढ़ रही है, महर्षि के उपदेश और कार्य समाज को बेहतरी की ओर ले जाने में मील का पत्थर हो सकते है।

सभी सांस्कृतिक संकट, राजनीतिक अनिश्चितता, अन्याय और शोषण के जिस युग में महर्षि दयानंद समाज सुधार, धर्म–उन्नयन और सनातन आदर्श की स्थापना का कार्य कर रहे थे, उस समय पग–पग पर कठिनाइयां थीं। युग के संकट से उबारने और मानवीय मूल्यों के होते क्षरण को रोकने के लिए गहरी सांस्कृतिक आत्म–शक्ति की जरूरत होती है। जब धर्म, अध्यात्म और रीति–रिवाज के नाम पर अनर्थ और अन्याय को ही धर्म बताया जाने लगे तब भी नव जागरण और न्याय के लिए संघर्ष की जरूरत होती है। गौरतलब है महर्षि दयानंद ने धर्म के नाम पर हिंसा, पाखंड, अंधविश्वास, कुरीतियों और कुप्रवृतियों के विरोध में वेद और शास्त्रों के प्रमाणिक तर्कों के साथ समाज में उतरे और मानवता और वैदिक धर्म की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर किया। महर्षि दयानन्द ने सर्वहितकारी विचार तब दिए थे जब भारतीय समाज गुलामी की कठोर जंजीरों में जकड़ा हुआ, अपने अतीत के गौरव और ज्ञान को भूल ईसाइयत की ओर बढ़ने लगा था। ऐसे विकट वक्त में दयानन्द ने निर्भीक होकर कहा,–सत्य, ज्ञान और विद्या मानव उन्नति और कल्याण के आधार हैं। सत्य के बिना न तो ज्ञान की अहमियत है और न तो विद्या की ही। उन्होंने वेद को सत्य, ज्ञान और विद्या का आधार बताया। वह अपने उपदेशों, उद्बोधनों और प्रवचनों में वेद विद्या को प्रमुखता देते थे। उन्होंने ने कहा, वेद सत्य, ज्ञान और विद्या के त्रिवेणी हैं। जो इस त्रिवेणी में स्नान कर लेता है, उसके मन, विचार और कार्य से अज्ञान, अविद्या और असत्य समाप्त हो जाते हैं। मानव मन को चंगा करने और जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष को हासिल करने के लिए वेद का रास्ता ही सबसे सहज, सरल और पवित्र है। वेद पर जोर देते हुए वह कहते हैं– वेद ऐसे दिव्य ज्ञान, विद्या और विज्ञान के आधार स्तम्भ हैं जहां से सभी तरह की विद्दायों और विज्ञानों को उदगम होता है। वेदों पर उनका जितना अमिट विश्वास, भक्ति, श्रद्धा और सद्भावना थी, वह अप्रतिम कही जा सकती है। यही कारण है योगी महर्षि अरविंद ने दयानन्द को अब तक वेदों का सबसे बड़ा हितैषी और आविष्कर्ता कहा है। योगी अरविंद कहते हैं– *'मेरा पूरा विश्वास है कि वेद की व्याख्या के विषय में महर्षि दयानन्द वेद के सच्चे सूत्रों के सर्वप्रथम आविष्कर्ता के रूप में सदैव समादृत किए जाएंगे, भले ही वेद की अंतिम सर्वांगपूर्ण व्याख्या कोई भी क्यों न हो। दयानन्द का प्रत्यक्षदर्शी चक्षु पुराने अज्ञज्ञन औश्र युग–व्यापी भ्रांति की अव्यवस्था और अन्धी कालरात्रि को भेद की सीधे ही सत्य के तल तक जा पहँचा और उसके मौलिक तत्त्व पर जा टिका। दयानन्द ने उन द्वारों की कुंजी प्राप्त की जिन्हें काल ने बन्द कर दिया हुआ था और उन्होंने उन अवरुद्ध निर्झरों के मुख पर लगी मुहर तोड़ फैंकी।''*

महर्षि दयानन्द ने धर्म, अध्यात्म, वैदिक शिक्षा, भाषा, देश सेवा, समाज सेवा, ज्ञान–विद्या का प्रचार–प्रसार सहित समाज, संस्कृति, धर्म और अध्यात्म को विकास के रास्ते पर आगे बढ़ाने वाले उत्तम कार्यों को 'यज्ञ' कह कर, सुकर्म की प्रतिष्ठा दी। सत्य, ज्ञान–विज्ञान और सत्य धर्म की स्थापना का कार्य किया और भारत में प्रचलित सभी मत–पंथों की निष्पक्ष समीक्षा भारत में करने की परम्परा डाली। यही कारण है समाज में प्रचलित 'सभी धर्म समान हैं और सभी धर्म ग्रंथ' बराबर हैं के विश्वास को तर्क और तथ्य की कसौटी पर कसने की तर्कसंगत व तथ्य संगत परम्परा आगे बढ़ी अंधकार में भटकते भारतीयों को महर्षि दयानन्द के रूप में पहली बार ऐसा सत्साहसी, शुभ संकल्पी और सर्व कल्याणकारी महामानव मिला था जिसने भारत की हर दिशा से रक्षा ही नहीं की बल्कि सोते हुए जन मानस को वेद ज्ञान का अलख जगाकर उन्हें जागृत भी कर दिया। वेदों के विषय में स्वामी दयानन्द का स्पष्ट मानना था कि वेद वह ज्ञान है जिसे पाने के मानव का समस्त चिन्तन–मनन प्रयत्नशील है। यस्मिन् विज्ञाते सर्वम् विज्ञातम् यानी जिसे जानने से सब कुछ जाना जा सकता है। वेद परमेश्वर की दिव्य वाणी है कि उद्घोषणा पहली बार दयानन्द ने की। वे कहते हैं– वेद में धर्म और विज्ञान दोनों की सच्चाइयाँ पाई जाती

हैं। जिन्होंने योग साधना और शास्त्रों का स्वाध्याय किया है वे जानते हैं कि वेदों में विज्ञान की वे सच्चाइयाँ भी हैं जिनहें आधुनिक विज्ञान अभी तक नहीं जान पाया है।

वह एकमत होकर कहते हैं– वेद ऐसे ज्ञान रश्मि के स्रोत हैं जहां मानव के आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक तापों और और विषयों को कसौटी प्रदान करते हैं। महर्षि ने समाज सुधार के अनगिनत कार्य तो किए ही आजादी के लिए अनगिनत स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भी तैयार किए। वह स्वभाषा, स्वसंस्कृति, स्वधर्म, स्वराष्ट्र, स्वाभिमान, स्वगौरव, स्वशिक्षा, स्वतंत्रता और शाकाहार को समाज का आधार मानते थे। उनकी आंखों में सभी मानवों के लिए प्रेम, करुणा, दया, सहिष्णुता और कल्याण के लिए स्थान था। वह सब का भला चाहते थे, भले ही उन्हें उनके लिए दुख सहने पड़े हों। असहायों, दुखियों, रोगियों, दलितों, गरीबों और अंधकार में भटक रहे अज्ञानी लोगों के लिए उन्होंने वह सब कुछ किया जो वह कर सकते थे। सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार विधि, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका और वेदांजलि में महर्षि दयानंद ने मानव के जीवन के हर पक्ष को मजबूत बनाने और उन्नति करने के सभी तरह के सूत्र और विचार दिए हैं। वह मत मतांतरों की आलोचना उनके सुधार के मद्देजनर करते हैं। वह जितना हिंदुओं के सुधार की बात करते हैं उनता ही मुसलमानों, ईसाइयों, बोद्धों, सिखों और जैनियों के सुधार का भी।

महर्षि का सारा जीवन सत्य, ज्ञान, विद्या और सुधार के कार्य में बीता। इसके लिए उन्होंने अपनी सारी ऊर्जा लगा दी। वह कहते हैं–सत्य, शुभ, ज्ञान, विज्ञान और तर्क की कसौटी पर कसकर ही किसी के विचारों को मानना चाहिए। अपने स्वार्थ और मान्यता के वशीभूत होकर किसी का अहित करना पाप है। जन्मगत जात–पांत, भेदभाव, छुआछूत और अन्य बुराइयों से दूर रहते हुए सब के हित में जो विचार, कार्य और उद्देश्य हों उन्हें ही मानना चाहिए। महर्षि दयानंद का अंतःकरण परम पावन, करुणामय और सहिष्णु था। उन्होंने कभी अपने घातक को सजा नहीं दी या दिलवाई ।

समाज, संस्कृति, धर्म, अध्यात्म, विज्ञान, ज्ञान, विद्या और राजनीति सहित अनेक विषयों पर महर्षि दयानंद ने अपने विचार सत्यार्थ प्रकाश में व्यक्त किए हैं। ईश्वर, जीव और प्रकृति जैसे सबसे विवादित विषयों को भी उन्होंने अपनी पुस्तकों में वेद और तर्क के आधार पर परिभाषित और व्याख्यायित किया है। दुनिया में सबसे अधिक विवाद और झगड़े ईश्वर, धर्म और मत–पंथ पर रहे हैं। महर्षि ने इन पर खुलकर अपने विचार सत्यार्थ प्रकाश में व्यक्त किए हैं। वह कहते हैं,– पहले ईश्वर, जीव और मत–पंथों को जानों, समझों, फिर मानो। वह कबीर की तरह गुरु को खूब ठोक बजाकर ही मानने पर जोर दिया है। गुरु कौन? को उन्होंने गुरु के लक्षण में तर्क के आधार पर बताए है। इसी तरह, प्रत्येक कार्य, विचार और विषय को भी मानने के पहले उन्हें खूब समझ लेने पर जोर देते हैं।

जागरण जीवन परिवार, समाज और संस्कृति के सभी क्षेत्रों में होना चाहिए। यही कारण है महर्षि दयानन्द ने तत्कालीन सभी क्षेत्रों में फैली बुराइयों, कुरीतियों, पाखंडों, अंधविश्वासों और अज्ञानता को दूर करने के लिए, वे सभी कार्य किए जिसकी उस वक्त जरूरत थी। महर्षि दयानन्द कहते हैं, गुलामी केवल राजनीतिक और देशगत ही नहीं होती बल्कि धार्मिक, सांस्कृतिक, भाषाई, विचारात्मक, आर्थिक और शिक्षात्मक भी होती है। अपने विचारों को गुलाम न बनाओं बल्कि विचारों को खुला छोड़ दो और उनमें उदारता का समावेश करो।

जब चारों ओर अंधकार और अज्ञानता छाई हुई हो ऐसे में सत्य और शुभ मार्ग दिखााने और बताने की जरूरत सबसे ज्यादा होती है। इसके लिए आत्म–शक्ति, आत्म–संकल्प और आत्म–जागरण की धारा को बहाने वाला चाहिए। भारतीयों को महर्षि दयानन्द के रूप में ऐसा युगान्तरकारी योद्धा मिला जिसने विदेशी राजसत्ता को ही ललकारा नहीं बल्कि धर्म, अध्यात्म, भक्ति, ज्ञान औश्र विद्या के नाम पर परोसे जा रहे अनर्थों को भी जड़ से समाप्त किया। दिव्य चेतना के धनी महर्षि दयानन्द ने भारतीय जनमानस की बिखरी शक्ति को संगठित किया और पराभव को प्राप्त होते भारतीय गौरव, अस्मिता और प्रतिष्ठा को भी वापस दिलाया।

महर्षि अरविंद योगी कहते हैं–भारत की भावी सन्तति को अनेक लोकोत्तर महापुरुष भारतीय नव–जागरण के शिखर पर दिखाई देंगे। उनकी महामण्डली में एक व्यक्ति अपनी अनूठी और अनुपम विशेषता के कारण औरों से स्पष्ट जुदा दीख पड़ता

है–अपने ढंग का अनोखा और अपने काम में भी औरों से निराला। यह ऐसा लगता है जैसे कोई बहुत समय तक एक कम या अधिक ऊँची पर्वत–श्रृंखला के बीच घूमता रहे जो दूर तक एक विशाल परिधिवाली और हरी–भरी हो और अपनी गगनचुम्बी एवं आकर्षक ऊँचाई के होते हुए भी नयनाभिराम हो, किन्तु उस श्रृंखला के बीच एक पर्वत उसे एकदम अलग दिखाई दें। उसी प्रकार ऋषि दयानन्द ऐसे दिखाई देते हैं, मानो निरा बल ही मूर्तिमान होकर पहाड़ के रूप में खड़ा हो गया हो, नग्न और सुदृढ़ ठोस चट्टान का पुंज, विशाल हो उतंग। इसकी हरी–भरी चोटि पर खड़ा सरोवर का वृक्ष आकाश से बातें कर रहा है, शुद्ध, प्राणदायी और उर्वरक जल का एक सुविशाल जलप्रपात मानों उसके इस शक्ति–पुंज में से ही फूट–फूट कर निकल रहा हो जो सारी घाटी के लिए पानी का ही क्या, स्वयं स्वास्थ्य और जीवन का भी झरना है। यह है वह छाप जो मेरे मन पर दयानन्द के व्यक्तित्व की पड़ती है। दयानन्द ने वेदों को सभी विद्दाओं, विज्ञानों और विचारों के अंतिम प्रमाण के रूप में स्वीकार किया ।

ग़ज़ल

अब तो साहिब जिन्दगी का रुख बदलना चाहिए
जर्द आंखों में कोई तूफां मचलना चाहिए।

इन हवाओं से भला कब तक बचाओगे दिये ।
चौखटों पर आंधियों में इनको जलना चाहिए ।।

हैं दुआएं, बारिशें भी और मौसम बावफा ।
फिर तो सूखी डाल से पत्ता निकलना चाहिए ।।

बर्फ की तलवार से क्या मिट सके जुल्मों – सितम।
वक्त की इस आंच में खूं को उबलना चाहिए ।।

रात –दिन जलती सी रहती है मेरे सीने में क्या ।
है अगर ये आग तो पत्थर पिघलना चाहिए।।

मैं करूं तुम पर भरोसा तो भला कैसे करूं ।
कोई सिक्का हक में मेरे भी उछलना चाहिए।।

बुझ गया सूरज भी अब तो जुगनू भी जलने लगे।
मुन्तजिर है बंद कमरा घर को चलना चाहिए।।

–✍भारत भूषण आर्य

स्वामी दयानन्द सरस्वती

शंकर क्या मूलशंकर नाम था दयानन्द का
हर समस्या के मूल का किया वह चिंतन
स्वराज्य का अलख जगाया वेदों से देश में
आओ हृदय से हम करें उसका अभिनंदन।

कल्याण का करने हारा कहलाता शंकर
पीना पड़ता है उसे साक्षात विष हलाहल
चौदह बार पी विष का प्याला वह योगी
वेदों का पुनरोद्धार करने में रहा सफल।

अन्धविश्वासों के मूल को खोजा जड़ता में
हुए ज्ञानी सब जब वेद स्वाधाय से विमुक्त
अशिक्षा,नारी दुर्गति,जात–पात का बन्धन
भारत देश को किया परतंत्रता से संयुक्त।

हर समस्या के हल का किया वह चिन्तन
वेदादि शास्त्रों से ढूँढा उसने इसका मूल
सांस्कृतिक आघात से विक्षिप्त भारतीय
अपना गौरवमयी इतिहास गए थे भूल।

राजा,सन्त–महात्मा, समाज सुधारकों में
घूमा जन जन में रखने को अपनी बात
कैसे होगा भारत वर्ष देश अपना स्वतंत्र
करता था चिंतन वह जाग पूरी पूरी रात।

स्मृतियों से दिया नारी जाति को सम्मान
क्या वेदों से जाति व्यवस्था पर आघात
विधर्मियों को ललकारा सिंहनाद कर वह
करते थे जो संस्कृति पर घात–प्रतिघात।

गुजरात में पैदा, संस्कृत का कर अध्ययन
बात समझाने को किया हिन्दी का चयन
आर्य" नाम दिए हिन्दी को वे आर्य भाषा
कहा आर्यावर्त कहलाता था हमारा वतन।

–✍ अरुण कुमार "आर्य"
प्रधान,जिला आर्य प्रतिनिध सभा
वाराणसी चन्दौली

कहानी

परवरिश

✍ डॉ अनुपमा श्रीवास्तव

''नहीं ये गलत है, हमे इसे लॉस्ट एंड फाउंड डिपार्टमेंट में जमा करा देना चाहिए।'' डरते हुए नेहा ने स्वाती से कहा।

''तू पागल है, इतनी सुन्दर पेन तो पूरे स्कूल में किसी के पास नहीं होगी। मैं तो घर ले जाउंगी, और कुछ दिनों तक घर में छिपा के रखूंगी, उसके बाद इस पेन से लिखूंगी। तेरे पापा तो तुझे ऐसी पेन कभी दिला भी नहीं पाएंगे।'' स्वाती ने गुस्सा होते हुए बोली।

''माँ नाराज होगी। मैं नहीं ले सकती। तू रख ले, मैं किसी से नहीं कहूँगी।''

''देख ये दो पेन का सेट है। एक तू ले ले, एक मैं ले लेती हूँ।''

''नहीं तुम ले लो, वरना अगर किसी से कह दिया, तो फालतू में लोग मुझ पर शक करेंगे।'' कहते हुए स्वाती ने जबरदस्ती पेन नेहा के बैग में रख दी। ''

नेहा स्वाती के घर में किराए पर रहती है, नेहा के पिता स्वाती के पिता के ऑफिस में काम करते है। निम्न–मध्यम वर्गीय परिवार है, किन्तु नैतिकता से भरपूर। ''मम्मी ! एक बात बताऊं आपको, आप नाराज तो नहीं होगी?''

''नही तो।''

''माँ! आज घर लौटते वक्त हमे साइकिल स्टैंड पर एक पेन सेट मिला।''

''अच्छा, क्या किया उस उसका?''

''माँ! एक स्वाती ने ले लिया और एक मुझे दे दिया।''

''बेटा! ये क्या किया आपने? आप लोगो को तो उसे खोया–पाया में जमा करना चाहिए था। आप घर क्यों ले आई? कल जमा कर देना।''

''माँ! पेन बहुत सुन्दर है और बहुत महंगा भी है। इतने सारे बच्चे स्कूल में पढ़ते है। किसी को क्या पता चलेगा? पापा कभी ऐसी पेन खरीब भी नहीं सकते है।'' डरते–डरते नेहा ने मम्मी से कहा।

''पापा तो बहुत सारी चीजे नहीं खरीद सकते है तो इसका मतलब हम चोरी करना शुरू कर दे?''

''मम्मी ये चोरी कहां है, हमे तो पड़ी मिली है।''

''बेटा! ये सिर्फ पेन नहीं है, ये किसी का अरमान है, किसी ने इसे बहुत प्यार से अपने उपयोग के लिए खरीदा होगा। उसकी फीलिंग्स इससे जुडी होंगी। जब भी तुम इस पेन को उपयोग में लाओगी, तुम्हे हमेशा याद आएगा की तुम्हे ये कहीं पड़ी मिली थी और जिसने इसे खोया होगा, वो उसे याद कर–कर के दुखी हो रहा होगा। तो ये पेन तुम्हे कभी खुशी नहीं दे पाएगी, क्योकि इसे खरीदने वाले की बद्दुआए भी इसके साथ रहेंगी। और उससे भी बड़ी बात इंसान को ईमानदार होना चाहिए, जिससे वो हमेशा सर उठ कर जी सके। अगर कभी जिसकी पेन है, उसने आपके पास देख लिया तो चोर होने का कलंक जीवन भर के लिए लग जाएगा– तुम पर भी और मुझ पर भी।'' माँ ने समझाते हुए नेहा से कहा।

अगले दिन नेहा ने पेन लॉस्ट एंड फाउंड में जाकर जमा कर दी। लगभग छः महीने बाद स्कूल की प्रिंसिपल क्लास के इंस्पेक्शन पर थी और वो नेहा के क्लास में भी इंस्पेक्शन के लिए आई। निरिक्षण करते समय उनकी

नजर स्वाती पर पड़ी, जो उसी पेन से लिख रही थी।
''स्वाती! तुम्हारी पेन तो बहुत सुन्दर है। कहां से खरीदा बेटा?''
''मैडम! मेरे पापा ने ला कर दिया है।'' सकपकाते हुए स्वाती ने जवाब दिया।
''दिखाना जरा। सच में बहुत सुन्दर है और ये तो इम्पोर्टेड लग रही है। आपके पापा विदेश से लाये है?''
''नहीं मैडम। वो तो यहीं से लाये है।''
''मेरे लिए भी मंगवा दो। मैं रूपए दे दूंगी।''
''जी मैडम। आप ये ही ले लीजिये।''
''नहीं, ये तुम्हारी है। तुम मेरे लिए नई मंगवा दो।'' कहकर प्रिंसिपल बाहर चली गई। उस पेन की क्लास के बच्चे पहले ही बहुत तारीफ कर चुके थे। घर जाते वक्त स्वाती ने नेहा से कहा, ''सुन तू अपनी पेन मैडम को दे दे। तू तो उससे लिखेगी नहीं। मैडम भी खुश हो जाएंगी और तेरे सर का बोझ भी उतर जाएगा।''
''मैं नहीं दे सकती।''
''चोट्टी है तू। मैंने ही तुझे दी थी और मुझे ही मना कर रही है।''
''मैंने पेन को आगे दिन ही लॉस्ट एंड फाउंड में जमा कर दिया था। मैं किसी का कुछ भी नहीं रखती। माँ कहती है, 'जितना अपने पास है, उतने में खुश रहना चाहिए।'' कहते हुए नेहा वहां से चली गई।
कई दिनों तक स्वाती उस पेन को बाजार में ढूंढती रही, ऑनलाइन भी खोजती रही लेकिन उसे वैसा पेन कहीं नहीं मिला।
महीने की तीस तारीख को लॉस्ट एंड फाउंड की असेंबली लगती थी, आज भी तीस तारीख है। सारे बच्चो को प्रिंसिपल मैडम ने इस बार बुलवाया था।
''मैडम ने क्यों सबको बुलाया है?जिसका कुछ खोता है वहीँ तो बस आता है।'' स्वाती ने नेहा से कह।
''थोड़ी देर में पता चल जाएगा।'' तभी प्रिंसिपल मैडम आ जाती है।
''बच्चो! आपको पता है हम क्यों हर महीने खोया–पाया का आयोजन करते है?''
''जिससे हमारी खोई हुई चीजे हमे वापस मिल जाये।'' बच्चो ने एक सुर में कहा।
''खोया–पाया में नाइनटी–नाइन परसेंट खोई हुई चीजे वापस मिल जाती है। टूटी हुई पेंसिल से महँगी घड़ी भी। पर एक परसेंट नहीं मिलती है, और जब नहीं मिलती है, तो कैसा लगता है आपको बच्चो?''
''बहुत खराब।''
''हम्म। बिलकुल सही कहा आपने, नहीं मिलने पर बहुत दुःख होता है। लगभग छः महीने पहले मेरा बेटा मेरी बर्थडे पर लंदन से आया था और उसने मुझे एक पेन का सेट गिफ्ट किया था। दुर्भाग्यवश अगले दिन ही वो मुझसे कहीं मिस हो गया। मैं इतने बड़े स्कूल की प्रिंसिपल हूँ, मुझसे कुछ मिस होना ठीक नहीं लगता, पर मैं भी तो इंसान हूँ, तो वो कहीं गिर गया। तीन दिन बाद लॉस्ट एंड फाउंड की मीटिंग थी और उस मीटिंग में मुझे अपनी एक पेन मिल गई। मुझे पता चला कि वो पेन नेहा ने जमा किया था, मुझे खुशी भी थी और दुःख भी, क्योकि वो दो पेन का सेट था और वापस एक आई थी। मैंने ये सोच कर संतोष कर लिया, नेहा ने एक तो वापस कर दी, एक रख ली।'' जो नेहा को जानते थे उन सबकी नजर नेहा पर टिक गई।
''कुछ दिन पहले मैं क्लास इंस्पेक्शन पर थी और मुझे अपनी पेन स्वाती के हाथ में दिखी। मैं देख कर हैरान हो गई, मैंने तुरंत नेहा की तरफ देखा, वो एक सस्ते पेन से लिख रही थी और मुझे तब सारी बात समझ में आ गई। दरअसल पेन नेहा ने नहीं स्वाती ने उठाया था। अब मैं स्वाती को स्टेज पर बुलाना चाहूंगी।

स्वाती कक्षा आठ से स्टेज पर आये।'' स्वाती धीमे–धीमे स्टेज की तरफ बढ़ती है, वो बहुत डरी हुई है।
''स्वाती तुमने स्कूल के नियम के अनुसार पेन क्यों नहीं जमा करवाई?''
''मैडम, वो। वो।''
''स्वाती! सीधे–सीधे बोलो।'' प्रिंसिपल ने डाटते हुए स्वाती से पूछा।
''मैडम पेन बहुत सुन्दर थी और बहुत अच्छी लग रही थी।'' कहते–कहते स्वाती रोने लगी।
''नेहा! अब तुम स्टेज पर आओ?''नेहा आत्म–विश्वास के साथ चेहरे पर मुस्कान लिए स्टेज पर आ गई।
''नेहा तुमने पेन क्यों वापस की?''
''मैडम! वो मेरी पेन नहीं थी और दूसरो की चीजों पर हमारा कोई हक नहीं होता है। और ये बात मेरी माँ ने मुझे समझाई, और अगले दिन मैंने स्कूल आकर सबसे पहले पेन जमा कर दी।''
''स्वाती! तुमने अपनी मम्मी को नहीं बताया था?''
''बताया था मैडम! उन्होंने कहा 'कुछ दिन के बाद इसका उपयोग करना, तब तक जिसकी होगी वो भूल जाएगा।'' सिसकते हुए स्वाती ने कहा।
अब प्रिंसिपल के चेहरे पर भी पसीना आ गया था, बच्चे गलती करे तो उन्हें समझा कर सही दिशा दिखाई जा सकती है, पर माँ–बाप गलती करे तो उन्हें कैसे समझाया जाये।
आज नेहा की माँ ने नेहा कर सर सबके सामने गर्व से ऊंचा कर दिया था और स्वाती की माँ ने उसे सबके सामने लज्जित कर दिया था। अब दोष किसको दे– बच्चो को या फिर परवरिश को?

कहानी

वक्त का महत्व

वक्त और समय से पहले हमें कुछ भी नहीं प्राप्त होता इसलिए हमें हर कार्य वक्त रहते पूरा करने का प्रयास करना चाहिए। कभी भी कोई कार्य वक्त पर नहीं टालना चाहिए।

बात उन दिनों की है मेरा एक मित्र था बहुत ही सुशील स्वभाव का था। पढ़ने में भी बहुत अच्छा था,पर उसकी एक बुरी आदत है वह कोई भी कार्य समय रहते पूरा नहीं करता था किसी भी कार्य को कल पर टाल दिया करता था उसकी पढ़ाई पूरी हो गई और उसे एक अच्छी कंपनी में नौकरी प्राप्त हुई प्रथम में उस कम्पनी नेउससे 5000 की मासिक सैलरी पर काम पर रखा उन्होंने कहा कि कुछ दिन आप का काम देखने के बाद हम आपका सैलरी बढ़ा देंगे किंतु उसे कम समय में ज्यादा पैसे कमाने की लालसा थी। हम मित्रों ने उसे समझाया कि समय के साथ चलने का प्रयास करो। तुम्हें तुम्हारे परिश्रम का फल बहुत जल्दी ही प्राप्त हो जाएगा किंतु धैर्य रखने का प्रयास करो किंतु उसने हमारी बातों की अवहेलना की और वह गलत तरीके से कार्य करके पैसे कमाने का प्रयास करने लगा उसने कंपनी में पहले मालिक का विश्वास जीता, उसके बाद उसने धीरे–धीरे करके गबन करना आरंभ कर दिया छोटे–छोटे गबन करने के चलते और कभी भी पकड़ में नहीं आया उससे उसका साहस बढ़। जब मालिक ने उसे एक बार सभी कर्मचारियों के वेतन के पैसों को बैंक में जमा करने के लिए दिया जो कि बहुत बड़ी अमाउंट थी उसके मन में तो लालच था ही, कम समय में ज्यादा पैसे कमाने का उसने उन पैसों को चुरा लिया और वह सोचा कि मालिक नहीं जान पाएंगे।कहते हैं ना कि चोर कितना भी सफाई से चोरी करे चोरी एक ना एक दिन सामने आ ही जाती हैं।मालिक उसकी कर्तव्य परायणता उसके परिश्रम को देखते हुए उसे अपनी कंपनी का मैनेजर बनाने का सोच लिया था।किंतु उसके लालच ने और कम समय में ज्यादा पैसे कमाने की लालसा ने उससे उसका सब कुछ छीन लिया और जो वह परिश्रम से प्राप्त कर सकता था किंतु उसके लालच ने उसकी सारी जिंदगी को बर्बाद कर दिया इसीलिए कहा जाता है कभी भी हमें लालच नहीं करना चाहिए वक्त के साथ चलना चाहिए।वक्त से बड़ा इस संसार में कुछ नहीं होता क्योंकि वक्त ही हमें अच्छे बुरे दिन दिखाता है वक्त ही है जो हमारी हर इच्छा को पूरा करता है इसलिए हमें वक्त के साथ चलने का प्रयास करना चाहिए वक्त की अहमियत को समझना चाहिए जो कि हमारे जीवन में बहुत महत्वपूर्ण है।

इस कहानी से हमें एक बात पता चलती की लालच बहुत ही बुरी बात है। इसलिए जीवन में कभी लालच नहीं करना चाहिए अपने ऊपर सम्पूर्ण विश्वास रखना चाहिए कि वक्त लगेगा जरूर पर हर कुछ हम अपने अथक परिश्रम से हासिल कर सकते हैं।

– ✍ अर्चना होता (शिक्षिका)
केन्द्रीय विद्यालय, ओडिशा

मात्र बजट बढाने से पर्यावरण प्रदूषण से मुक्ति का रास्ता नहीं खुलता

बजट 2021–22 में दिल्ली समेत बाइस शहरों में बढ़ते प्रदूषण से निपटने के लिए 2,217 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है, और पर्यावरण मंत्रालय के लिए 2,869 करोड़ आवंटित किए गए हैं। पिछले बजट से इस बार पर्यावरण को सुधारने के बाबत 42 गुना ज्यादा बजट आवंटित किया गया है। गौरतलब है इस बार के बजट में दस लाख से ज्यादा आबादी वाले शहरों पर गौर किया गया है और कहा गया है कि धुएं से बेजार होने वाले शहरों के लिए ऐसी नीति बनाई जाएगी, जिससे वायु प्रदूषण की समस्या से निजात मिले, लेकिन वह कौन सी नीति होगी, जिससे दिल्ली समेत अत्यंत प्रदूषित शहरों को प्रदूषण से निजात मिलेगी, अभी कोई खाका पेश नहीं किया गया है। गौरतलब है दिल्ली और एनसीआर में दीपावली के बाद प्रदूषण अति खतरनाक स्तर पर बना हुआ है। इससे सांस लेने में परेशानी, सिर दर्द, कब्ज, गैस, श्वास लेने में दिक्कत, आंखों में दर्द और शरीर भारी होने जैसी समस्याएं बनी हुई हैं। किसान आंदोलन की वजह से दिल्ली के चारों तरफ तकरीबन सभी सीमाएं बंद हैं। लेकिन प्रदूषण की समस्या पिछले सालों की तरह पिछले एक महीने में अत्यंत खतरनाक स्तर से भी ज्यादा हो जाना, चिंता पैदा करने वाली है। पिछले साल अपैल में प्रदूषण की समस्या दिल्ली सहित तमाम शहरों से खत्म हो गई थी। इसकी वजह प्रदूषण फैलाने वाले सभी कारकों का बंद हो जाना था। कोरोना जहां लोगों के लिए मौत का दहशत पैदा कर रहा था वहीं पर प्रदूषण उन शहरों में लोगों को राहत दिला रहा था, जहां यह जानलेवा बन गया था। हरयाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसानों द्वारा पराली जलाने और दीपावली के पटाखों से जो पर्यावरण दिल्ली और आस–पास के इलाकों में खतरनाक स्तर पर पहुंचा गया था, वह लगातार बढ़ता जा रहा है। इससे लाखों लोगों को सांस की समस्या से दो–चार होना पड़ा है। गैर भाजपा प्रदेश की सरकारें किसान आंदोलन को लेकर तो खूब हो–हल्ला मचा रही हैं, लेकिन बढ़ते विनाशकारी प्रदूषण पर चुप्पी साधे हुई हैं। ऐसा लगता है जैसे पर्यावरण से बढ़ रही सेहत से ताल्लुक रखने वाली समस्याएं ऐसी नहीं हैं, जिन पर सिद्दत से गौर किया जाए।

लासेंट मेडिकल जर्नल मे प्रकाशित अध्ययन के मुताबिक वर्ष 2019 में हुई मौतों में 18 फीसदी वायु प्रदूषण की वजह से हुई थीं। गौरतलब है, वर्ष 1990 से 2019 तक वायु प्रदूषण में 115 फीसदी की बढ़ोत्तरी हुई है। ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज स्टडी 2019 में कहा गया है कि वायु प्रदूषण की वजह से भारत में 32.5 फीसदी मौतें सांस की गम्भीर बीमारियों की वजह से हुईं। गौरतलब है यह आंकड़ा देश में हुई कुल मौतों का 17.8 फीसदी है। एक आंकड़े के अनुसार सांस जनित बीमारियों में 16.2 फीसदी मौते स्टोक, 11.2 फीसदी मौतें निम्न श्वसन संक्रमण, 5.2 फीसदी मौतें नवजात शिशु रोग, 3.8 फसदी मधुमेह और 1.7 फीसदी फेफडे के कैंसर से होती हुईं। गौरतलब है, फेफडों में कैंसर होने के पीछे वायु प्रदूषण के पीएम 2.5 कण सबसे बड़ी वजह माने जाते हैं। यदि प्रदूषण से होने वाले आर्थिक नुकसान का आंकलन करें तो पता चलता है महज 2019 में ही जीडीपी का 1.4 फीसदी का नुकसान हुआ। यह करीब 2.6 लाख करोड़ है।

प्रदूषण की समस्या जहां वायुमंडल में बढ़ते जहरीले गैस कणों का बढ़ना है वहीं पर, घर के अंदर भी तमाम राज्यों में शुद्ध हवा न मिलने की विकट समस्या है। जिन राज्यों में घरों में वायु प्रदूषण की गम्भीर समस्या है, वे राज्य हैं बिहार, उड़ीसा, असम, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश और अरुणाचल प्रदेश। इसका मतलब है, इन राज्यों में प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना कारगर ढंग से लागू नहीं हो पाई है। गौरतलब है जिन राज्यों में उज्ज्वला योजना का लाभ घरों के अंदर पहुंचा हैं, उन राज्यों में घरों के अन्दर पिछले वर्षों में 64 फीसदी प्रदूषण कम हुआ है।

जलवायु सम्मेलनों में हर साल यह तय होता है कि

किन–किन क्षेत्रों में प्रदूषण फैलाने वाले कारक ज्यादा हैं और उन्हें कम करने के लिए क्या करना चाहिए। पर्यावरण प्रदूषण को लेकर 1972 में स्टाकहोम में संयुक्त राष्ट्र संघ की एक उच्च स्तरीय बैठक हुई थी। दुनिया के मुल्कों से सिरकत करने आए तमाम नेताओं ने इस बाबत खुलकर अपने विचार रखे थे और अपने सुझाव भी दिए थे। इसमें नेताओं के जरिए सुझाए गए 'पर्यावरण क्षरण' की विकट समस्या और उससे पैदा होने वाले संकट पर गौर करने पर सहमति भी हुई थी, लेकिन उस सहमति पर विकसित देशों ने शायद ही अमल किया हो। विकासशील देशों में भी चीन और कुछ देश सम्मेलन में हुईं ग्रीन हाउस गैसों की कटौती पर अमल नहीं कर रहे हैं।

जहां तक पर्यावरण प्रदूषण में ग्रीन हाऊस गैसों की प्रमुख भूमिका की बात है उसके मुताबिक एक अमरीकी एक साल में 16.6 टन कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन करता है, जबकि एक भारतीय महज 1.5 टन ही करता है। एक अमेरिकी 12 भारतीय के बराबर ग्रीन हाऊस गैसों को छोड़ने का जिम्मेदार है। आंकड़े के अनुसार भारत का कार्बन उत्सर्जन के मामले में विश्व के कुल कार्बन उत्सर्जन का महज प्रति व्यक्ति 1.7 टन ही करता है। भारत इसे और भी कम करने की बराबर कोशिश में लगा हुआ है। इसी के तहत भारत में प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना, राष्ट्रीय सौर ऊर्जा मिशन, राष्ट्रीय ऊर्जा कुशलता वृद्धि मिशन, राष्ट्रीय हरित भारत मिशन, राष्ट्रीय सतत बसावट भारत मिशन, हिमालय पारिस्थितिकी प्रणाली, राष्ट्रीय हरित कृषि मिशन तथा जलवायु परिवर्तन के लिए राष्ट्रीय रणनीतिक ज्ञान मिशन की स्थापना की जा चुकी है और इन पर कार्य भी चल रहा है। सौर ऊर्जा, पनचक्की, कूड़ाकरकट से चलने वाले विजली घर, और जैविक ऊर्जा भी वायु प्रदूषण कम करने में बेहद मददगार साबित हो रहे हैं। बढ़ता ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन गैस से बढ़ने वाली प्राकृतिक और सामाजिक समस्याएं तथा वन्य प्राणियों पर पड़ रहे असर की सबसे बड़ी वजह वायु मंडल का निरंतर प्रदूषित होते जाना है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार जलवायु परिवर्तन का असर न केवल सेहत पर विपरीत असर डाल़ रहा है, बल्कि प्रमुख खाद्य उत्पादों, फलों पर भी इसका असर देखा जा रहा है। पिछले साल अप्रैल से दिसंबर तक 2 लाख हेक्टेयर से अधिक फसल की बर्बादी हुई है। इससे वैज्ञानिकों की चेतावनी सच साबित हो रही है कि ऋतुचक्र में आया परिवर्तन कई समस्याओं को जन्म देने वाला होगा। अंतरराष्ट्रीय कृषि अनुसंधान कंसलटेटिव ग्रूप के मुताबिक 2050 तक भारत में सूखे के कारण गेंहू के उत्पादन में 50 प्रतिशत की कमी आएगी। गेंहू की इस कमी के कारण भारत के 20 करोड़ लोग भुखमरी के शिकार होंगे। कार्बन डाइऑक्साइड का संकेद्रण कई प्रतिशत बढ़ जाने के कारण ऋतुचक्र में बेतहांसा बदलाव आएगा जिससे हाइपोथर्मिया, दिल और श्वास की बीमारियां लगातार बढ़ेंगी। इससे इन बीमारियों से मरने वालों की संख्या भी बढ़ेगी। नये शोध से यह पता चला है कि धरती का तापमान बढ़ने से डेगू, मलेरिया और पीला बुखार जैसे घातक बीमरियों के कीटाणु वायुमंडल में तेजी के साथ पनप सकते हैं और करोड़ों लोगों को अपनी चपेट में ले सकते हैं। कोरोना के संक्रमण का अभी तक ठीक–ठीक वजह का पता नहीं चल सका है। हो सकता है, बढ़ते वायु, जल, अग्नि और मिट्टी प्रदूषण में किसी कारण से यह फैला हो।

वैज्ञानिकों का यह अनुमान सही साबित हो रहा है कि बीतते वक्त के साथ जैसे–जैसे प्रदूषण बढ़ेगा, उसी के साथ तमाम तरह की बीमारियां, संकट और समस्याएं भी बढ़ेगी। भारत में आए दिन नये–नये रोग पैदा हो रहे हैं। नये तरह के बुखार, मानसिक नई तरह की बीमारियां, नये हड्डी के रोग, आंख की समस्याएं, मांसपेशियों में बढ़ती समस्याएं और फेफड़े–हृदय सम्बंधी बीमारियां नए रूप में आने लगी हैं।

इसी तरह कृषि, बागवानी, औषधि और फूल की खेती करने वालों के मुताबिक नये ऐसे रोग उनकी उत्पादों में दिखने लगे हैं जो पहले कभी दिखाई नहीं पड़ते थे। उत्तर प्रदेश,, लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश, जम्मू–कश्मीर, दिल्ली और राजस्थान में ओजोन जनित प्रदूषण बहुत ज्यादा बढ़ गया है। दिल्ली में यमुना का पानी इतना प्रदूषित हो गया है कि वह छूने लायक नहीं रह गया है। नये–नये रोग पनपने लगे हैं। इसी तरह मृदा प्रदूषण से भी मानव, वन्य जीवों, वनस्पतियों और जीव–जन्तुओं में तरह–तरह के नये रोग पैदा होने लगे हैं।

पर्यावरण से ताल्लुक रखने वाले ये तमाम आंकड़े और विश्लेषणों से ऐसे तमाम सवाल उठते हैं जो भारी

भरकम बजट को लेकर हैं। इसमें पहला सवाल यह है कि क्या इंसान, जीव–जन्तु और वनस्पतियों को प्रदूषण से छुटकारा दिलाने में यह बजट कुछ कारगर होगा? सवाल यह भी है कि भारी भरकम नए बजट से क्या दिल्ली समेत पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से जूझ रहे शहरों को निजात मिलेगी या गंगा की सफाई के नाम पर आवंटित बजट जैसा हस्र इस नए पर्यावरण बजट का भी होगा ?

मनुष्य -- अर्थात् जो विचार के बिना किसी काम को न करें; उसका नाम "मनुष्य" है।

आर्य -- जो श्रेष्ठ स्वभाव , धर्मात्मा , परोपकारी, सत्य विद्या आदि गुणयुक्त और आर्यावर्त्त देश में सब दिन से रहने वाले हैं, उनको "आर्य" कहते हैं।

आर्यावर्त्त देश -- हिमालय, विन्ध्याचल, सिन्धु नदी और ब्रह्मपुत्रा नदी इन चारों के बीच और जहां तक उनका विस्तार है उनके मध्य में जो देश है; उसका नाम "आर्यावर्त्त" है।

दस्यु --- अनार्य अर्थात जो अनाडी आर्यों के स्वभाव और निवास से पृथक डाकू, चोर, हिंसक कि जो दुष्ट मनुष्य है, वह "दस्यु" कहाता है ।

वर्ण --- जो गुण और कर्मों के योग से ग्रहण किया जाता है; वह "वर्ण " शब्दार्थ से लिया जाता है ।

वर्ण के भेद --- जो ब्राह्मण, क्षत्रिय , वैश्य और शूद्रादि हैं; वे "वर्ण के भेद" कहाते हैं ।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती

स्वराज

कम याद किए जाते हैं,
कई बड़े लोग; उनसे भी कम,
जिनके होते हैं आदर्श ऐसे बड़े लोग;
यदि बात करते हैं विषमता मिटाने की,
जो बनी होती है बड़े और छोटे लोगों के बीच।
व्यक्ति नहीं, समाज की, जाति नहीं राष्ट्र की
बात कर, उपेक्षा के पात्र हो जाते हैं, वे बड़े लोग;
'सत्यार्थ-प्रकाश' को सब के बीच करके उजागर,
उनके निशाने पै रहा होता है कभी, दूषित-आडंबर।
मूलशंकर से दयानन्द तक की,
'जिज्ञासा' से 'मीमांशा' तक की,
शिष्य से स्वामी तक की यात्रा में,
हटाये होते हैं उन्होंने कई काले,मोटे पर्दे,
कि जिनके भीतर कैद रखा गया होता है,
और मिथ्या-विश्लेषण से बदला गया होता है सत्य,
जो आह्वान करते हैं लौटने का वेदों की ओर,
उन ज्ञान-सागरों की ओर कि जिन्हें समझना शेष है;
जिनके लिए आर्यावर्त भारत है,और भारतीय,आर्य,
जो परतंत्र भारत में बने,स्वराज की पहली आवाज!
जो रुकते नहीं,झुकते नहीं,
डिगाने पर भी डिगते नहीं,...
पीकर जहर,हो जाते हैं अमर,
जारी ही रहता है जिनका सफर,
बहुत सारे लोग करते हैं क्योंकि उनपर विश्वास,
जिन्हें ऐसे महात्मा के महा अभियान से है आसय
कि एकदिन हर भारतीय को मिल जाएगा स्वराज,
कि हर अड़चन हटा बनेगा,...समतामूलक समाज!

– ✍ अरुण कुमार पासवान

परिषद्–समाचार

आर्य लेखक परिषद् के तत्वाधान में सप्त दिवसीय अंतरराष्ट्रीय वेबीनार संगोष्ठी सम्पन्न

२० से २६ जनवरी २०२१

विश्व में फैली कोरोना महामारी के इस संकट काल में जिसने समुचे मानव समाज में एक दूरी पैदा कर दी है और आज जिसके कारण किसी भी प्रकार के सामाजिक कार्यक्रमों को करना दुष्कर हो गया है ऐसी परिस्थिति में साहित्यकार जगत् को एक मंच पर लाने के लिए 20 जनवरी से 26 जनवरी 2021 तक आर्य लेखक परिषद् के तत्वाधान में सप्त दिवसीय वेबीनार संगोष्ठी का आयोजन किया गया। सप्त दिवसीय आयोजित सम्मेलन में देश–विदेश से जुड़े साहित्यकार जन व लेखकों द्वारा अनेक विषयों पर खुलकर परिचर्चा हुई । प्रथम दिवस का आधार विषय – ***"वेदों की वर्तमान परिपेक्ष में उपयोगिता एवं प्रासंगिकता"*** और ***"महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य की प्रासंगिकता"*** रखा गया था।

वेबीनार संगोष्ठी का उद्घाटन 20 जनवरी को शाम 6:00 बजे गायत्री मन्त्र के साथ हुआ। इस अवसर पर विश्व विख्यात आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय (दिल्ली), आचार्य वेदप्रिय शास्त्री (प्रधान, आर्य लेखक परिषद्), वैदिक विद्वान् वेद प्रकाश विद्यार्थी जी (अजमेर), श्री एस.पी कुमार जी (कर्नाटका), जयेश गुप्ता जी, नरेंद्र कुशवाहा जी, वेद कुमार दीक्षित जी (मंदसौर), श्री प्रांशु आर्य (कोटा), सम्मेलन के संयोजक, शब्द शिल्पी व चिंतक आचार्य अखिलेश आर्येन्दु व देश के विभिन्न प्रान्तों से बड़ी संख्या में साहित्यकार, लेखक व आर्यजन उपस्थित थे।

सम्मेलन का आरम्भ कर्नाटका से जुड़ी श्रीमती प्रेमलता अरोड़ा जी के मधुर भजन के साथ हुआ। उसके पश्चात् निर्धारित विषय के बीज भाषण के रूप में आर्य लेखक परिषद् के प्रधान एवं आर्ष क्रान्ति के प्रधान सम्पादक आचार्य वेदप्रिय शास्त्री ने कहा कि – आज आर्य समाज को वेद के सिद्धांतों और महर्षि दयानन्द को आगे रखकर चलना होगा। सिद्धांतों के प्रचार के लिए आर्य समाज में सामान्य स्तर से लेकर के उच्च कोटि के विद्वानों को तैयार करना होगा जो श्रोताओं के स्तर, समय व स्थान के अनुकूल प्रवचन करने वाले हो। विद्वानों को प्रवचन में सैद्धांतिक चर्चा हो न कि व्याख्यान के नाम पर मात्र कुछ किस्से – कहानियाँ। उन्होंने कहा कि हमें गांव–गांव में जाकर अत्यंत सरल एवं जन साधारण भाषा में वेद व आर्य समाज के सिद्धांतों को प्रस्तुत करना होगा तभी वर्तमान में हम वेदों की उपयोगिता व ऋषि दयानन्द के विचारों से संसार को परिचित करा सकते हैं।

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज तक संसार में जितने भी वेद भाष्य हुए हैं चाहे वो सायण का हो, महीधर का हो, उव्वट का हो या मैक्समूलर का उन सब में स्वामी दयानन्द का वेद भाष्य से ही सबसे अधिक प्रामाणिक व पूर्णरूपेण प्रासंगिक है।

वेबीनार का सञ्चालन आर्य लेखक परिषद् के यशस्वी मंत्री आचार्य अखिलेश आर्येन्दु जी द्वारा बड़ी ही कुशलता से किया गया। शान्ति पाठ के साथ प्रथम दिवस का सम्मेलन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

सम्मेलन का द्वितीय दिवस 21 जनवरी 2021 को ठीक शाम 6:00 बजे शुरू हो गया। एक घण्टे चलने वाले इस वेबीनार सम्मेलन में कुल दो सत्र हुए जिसमें प्रथम सत्र का आधार विषय – ***"अन्तर्भाषायी सम्बन्ध से राष्ट्रीय एकता"*** था । सत्र का आरम्भ गायत्री मन्त्र एवं श्रीमती प्रेमलता अरोड़ा जी के मधुर भजन ''मानव अगर तू चाहे दुनिया को हरा देना पर ईश्वर के दर पर सर अपना झुका देना'' से हुआ।

सत्र के विषय के मुख्य वक्ता डॉ विनोद कुमार विलासराव (हिन्दी विभागाध्यक्ष व्यंकटेश महाजन वरिष्ठ महाविद्यालय महाराष्ट्र) ने अपने व्याख्यान में कहा कि ऋग्वेद के दशम मण्डल के 125 सूक्त में 8 मन्त्र हैं जिसे वाक् सूक्त कहते हैं जिसमें भाषा या वाणी

का वर्णन किया गया है और जिसे सही रूप में राष्ट्रीय निर्मात्री भाषा कहा जा सकता है और वह आर्य भाषा ही है जो समूचे राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरो सकती है। वैदिक वांग्मय में भाषा की महिमा गाई गई है। शतपथ ब्राह्मण में भाषा को विराट कहा गया है और कहा है वाणी द्वारा ही सारे काम किए जाते हैं। ताण्ड्यड ब्राह्मण में भाषा को नदी की उपमा दी है और कहा गया है कि जिस प्रकार नदी सदैव बहती रहती है उसी प्रकार भाषा भी सदैव बहती रहती है। इसी तरह ऐतरेय ब्राह्मण ने भाषा को समुद्र कहा है। जिस प्रकार समुद्र सदैव अपनी मर्यादा में बना रहता है ठीक उसी प्रकार भाषा भी सदैव मर्यादित होनी चाहिए। वैदिक वांग्मय में इस प्रकार अनेक प्रकार से आर्य भाषा का गुणगान किया गया है किन्तु हमें आज के सन्दर्भ में समझना होगा जब हमारे संविधान द्वारा 24 प्रादेशिक भाषाओं को स्वीकार किया गया है। ऐसी स्थिति में आंतरिक भाषाओं में सम्बन्ध तभी स्थापित हो सकता है जब वह एक ही लिपि में लिखी वह बोली जाए। उन्होंने कहा कि भारतीय साहित्य जो प्रादेशिक भाषा के माध्यम से रचा जा रहा है वह साहित्य भारतीय एकता को मजबूत करने वाला साहित्य है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम एक भारतीय के रूप में आगे आए न कि एक प्रांतवादी के रूप में और जब हम भारतीय के रूप में सामने आकर एक दूसरे की भाषा के साहित्य को अनुवाद द्वारा जान सकेंगे तो हमारी राष्ट्रीय एकता स्वतः ही सुदृढ़ होगी और यह तभी सम्भव होगा जब हम देवनागरी में सभी भाषाओं के साहित्य का अनुवाद करेंगे।

दूसरे सत्र का मुख्य विषय था – ***"आदर्श समाज निर्माण में आर्य समाजिक पत्रकारिता"*** जिसके मुख्य वक्ता के रूप में आचार्य विमल कुमार जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि – आर्य सामाज का पत्रकारिता के क्षेत्र में क्रान्तिकारी योगदान रहा है। जिस समय देश में फारसी, उर्दू व अन्य प्रादेशिक भाषाओं का राजकीय क्षेत्र में बोलबाला था और हिन्दी उपेक्षित की जाती थी ऐसे समय मे आर्यसमाज ने हिन्दी भाषा में पत्रकारिता करके राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने का सफल प्रयास किया। डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार, डॉ. भवानी लाल भारतीय, क्षितिश वेदालंकार, युधिष्ठिर मीमांसा आदि जैसे दिग्गजों ने हिन्दी भाषा में पत्रकारिता करके अभूतपूर्व क्रान्तिकारी संदेश दिया था। देश की स्वाधीनता संग्राम में महर्षि दयानन्द और आर्य समाजिक पत्रकारिता का क्रांतिकारियों के निर्माण में बड़ा भारी योगदान था जिसने उन्हें देश की स्वाधिनता के लिए बलिदान होने के लिए प्ररेरित किया। ***"वह शक्ति हमे दो दयानिधे कर्त्तव्य मार्ग पर डट जाएं"*** जैसे प्रेरणादायी पंक्तियां पण्डित रामप्रसाद बिस्मिल की रचना थी जो अपने को कट्टर आर्य समाजी कहते थे। आर्य समाज की पत्रकारिता ने स्वधर्म, स्वसंस्कृति व स्वभाषा के प्रति समाज को जाग्रत किया। उन्होंने कहा कि समाज के निर्माण में आर्यसमाज लेखन व पत्रकारिता में पण्डित लेखराम का महत्वपूर्ण योगदान है जिनका कहना था कि ***"तहरीर और तकरीर का काम कभी बंद नहीं होना चाहिए।"*** ऐसे ही पण्डित प्रकाशवीर शास्त्री, पण्डित नाथूराम शंकर, पण्डित रामचंद्र देहलवी, डॉ हरिशंकर शर्मा डि.लीट, कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर जैसे लेखक और पत्रकारों की लम्बी सूची है जो आर्य समाज ने इस समाज और राष्ट्र को दिए है।

अंत में कार्यक्रम के अध्यक्षता कर रहे आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि भाषा व साहित्य वही होता है जो समाज और राष्ट्र की पीड़ा को सम्मुख ला कर रख दे और जो विद्युत बन कर के मृतप्रायः समाज में स्वधर्म व स्वराष्ट्र के उत्थान के लिए प्राणशक्ति फूंक दें। भाषा वह है जो अंधकार को हटाकर ज्ञान की दीप्ति को जगा दे, जो मृत व्यक्ति में चेतना जगा दे और ऐसी भाषा का प्रयोग आधुनिक भारत में सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द ने ही किया था। प्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार रामचंद्र शुक्ल ने महर्षि दयानन्द के लिए कहा था कि *"जिस समय भाषा रेंगना व घुटनो के बल चलना सिख रही थी उस समय ऋषि दयानन्द ने भाषा को सब प्रकार से समर्थ बना कर के ऊँगली पकड़ कर चलना सिखाया।"*

दोनों सत्रों का सञ्चालन आचार्य अखिलेश आर्येन्दु जी ने किया। देश– विदेश से जुड़े सभी साहित्यकारों व लेखकों का आभार व्यक्त किया गया एवं शान्ति पाठ के साथ द्वितीय दिवस के सम्मेलन का समापन हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय वेबीनार सम्मेलन एवं संगोष्ठी का तृतीय दिवस 22 जनवरी 2021 को शाम ठीक 6:00 बजे बड़े उत्साह और उमंग से शुरू हुआ। देश विदेश से बड़ी संख्या में सम्मेलन से ऑनलाइन जुड़े। सम्मेलन का सीधा प्रसारण आर्य लेखक परिषद् के फेसबुक पेज पर भी लाइव रहा जिसे आज भी कोई भी आर्य लेखक परिषद् के फेसबुक पेज जाकर देख व सुन सकता है।

आज के सम्मेलन के प्रथम सत्र का मुख्य आधार विषय था – ***"वेद और दयानन्द ही क्यों आदर्श समाज निर्माण के लिए आवश्यक हैं ?"*** इस विषय पर आर्य जगत् की सुप्रसिद्ध वेद पण्डिता आचार्या डॉ. सूर्या देवी जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि – मनुष्य समाज की इकाई है इसलिए हमें सर्वप्रथम आदर्श मनुष्य का निर्माण करना होगा और आदर्श मनुष्यों के निर्माण से ही एक आदर्श समाज का निर्माण हो सकता है। आदर्श समाज और देश के निर्माण के लिए महर्षि दयानन्द ने नारा दिया था वेदों की ओर लौटो इसलिए वेदों की शिक्षकों को ही धारण कर के एक आदर्श समाज बन सकता है। मनुष्य का जीवन कैसा हो ? उसका खान–पान कैसा हो? अचार–विचार कैसे हो ? इसके लिए वेदों में विस्तार से बताया गया है। हमें प्रतिदिन वेद का स्वाध्याय करना होगा, ईश्वर को सर्वज्ञ मान कर कार्य करना होगा, वैदिक वांग्मय में ऋषियों द्वारा बताए मार्ग पर चलना होगा तभी हम एक आदर्श समाज का निर्माण कर सकते हैं।

आज के सम्मेलन के दूसरे सत्र का मुख्य आधार विषय था – ***"विदेशों में आर्य समाज"***। इस सत्र के मुख्य वक्ता नॉर्वे (यूरोप) से जुड़े हुए प्रसिद्ध साहित्यकार एवं चिंतक डॉ सुरेश चंद्र शुक्ल ने अपने उद्‌बोधन में नॉर्वे और यूरोप में आर्य समाज की वर्तमान में चल रही सामाजिक गतिविधियों से परिचित करवाया। उन्होंने बताया कि नॉर्वे में लोगों को पढ़ने का बहुत शौख है। भारत में जितनी पुस्तकें छपती व प्रकाशित होती है चाहे वे किसी भी भाषा की हो वे सब नॉर्वे में नॉर्वेजीयन भाषा में बड़ी आसानी से उपलब्ध हो जाती है। उन्होंने कहा कि नॉर्वे में प्रत्येक व्यक्ति वेदों के विषय में जानता है व वेदों को पढ़ने में रुचि रखता है। वहाँ की सभी स्थानीय भाषाओं में वेदों के अनुवाद उपलब्ध है। इसके साथ ही वहाँ आर्य समाज में जाकर लोग यज्ञ करना पसन्द करते हैं एवं यज्ञ के प्रति काफी जागरूक हैं। आर्यसमाज से जुड़कर वहां किये गए कार्यो के कई संस्मरण उन्होंने सुनाए और कहा कि देश, समाज और संसार की भलाई के लिए आर्य समाज का समूचे विश्व में होना बहुत ही अवश्यक है ।

दोनों ही सत्रों का सञ्चालन आचर्य अखिलेश आर्येन्दु जी ने किया। शांतिपाठ के साथ तृतीय दिवस के कार्यक्रम का समापन हुआ।

शेष अगले अंक में।

– ✍ *प्रांशु आर्य*